मानिला वाणी

मासिक ई-पत्रिका

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुणीधार,
मानिला- 263 667 (अल्मोड़ा)

अंक- 06 2025-26 फरवरी, 2026

विवरणिका

इस अंक में...

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	सम्पादक की कलम से...	i
2.	छात्र-छात्रा लेख अनुभाग	1-5
3.	प्राध्यापक लेख अनुभाग	6-18
4.	समसामयिकी	19-20
5.	जनवरी माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ	21-22
6.	जनवरी माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व (एक जीवन परिचय)	23-26
7.	जनवरी माह के महत्वपूर्ण दिवस	27-29
8.	चित्र दीर्घा	30-32
9.	कलाकृति अनुभाग	32-35
10.	कुछ अनुशंसित पुस्तकें	36
11.	देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य	37-38
12.	रोजगार समाचार	39

संपादकीय

सप्रेम नमस्कार।

बड़े हर्ष और गौरव के साथ हम कॉलेज पत्रिका के इस नवीनतम अंक **'नवपल्लव'** को आपके हाथों में सौंप रहे हैं। 'नवपल्लव' केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक विचार है– नयापन, कोमलता और निरंतर विकास का प्रतीक। जिस प्रकार वसंत के आगमन पर वृक्षों पर नई कोपलें (पल्लव) फूटती हैं और संपूर्ण प्रकृति नवजीवन से भर उठती है, ठीक उसी प्रकार यह पत्रिका हमारे कॉलेज के प्रतिभावान विद्यार्थियों की कल्पनाओं और मौलिक विचारों का एक खिला हुआ उपवन है।

इस अंक को तैयार करने में संपादकीय मंडल ने अथक प्रयास किए हैं। हम उन सभी छात्र-छात्राओं और प्राध्यापकों के आभारी हैं जिन्होंने अपने विचारों को शब्दों के रूप में पिरोया। साथ ही, कॉलेज प्रशासन और हमारे आदरणीय शिक्षकों का मार्गदर्शन हमारे लिए संबल रहा।

हमारा उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि आपके भीतर छिपे उस रचनाकार को जगाना है जो दुनिया को एक नए दृष्टिकोण से देखता है। संपादकीय टीम की ओर से हम उन सभी का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजूद इस अंक को पूर्णता प्रदान की। हम विशेष रूप से अपने प्राचार्य महोदय और शिक्षकों के आभारी हैं, जिन्होंने हमें 'पल्लवित' होने के लिए सही वातावरण प्रदान किया।

शुभकामनाओं सहित!

संपादकीय समिति:

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद (प्रधान सम्पादक)

डॉ० शैफाली सक्सेना (सह-सम्पादक)

छात्र-छात्रा

लेख अनुभाग

कबाड़ से जुगाड़

कॉलेज लाइफ के लिए सस्टेनेबल अपसाइकिलिंग हैक्स

कॉलेज लाइफ में सस्टेनेबिलिटी को अपनाना न केवल पर्यावरण के लिए फायदेमंद है, बल्कि यह आपके बजट के लिए भी एक स्मार्ट विकल्प है। 'अपसाइकिलिंग' के जरिए आप अपने हॉस्टल के कमरे से निकलने वाले पुराने सामान को बेहद उपयोगी और स्टाइलिश चीजों में बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक पुरानी सूती टी-शर्ट को फेंकने के बजाय, आप उसे बिना किसी सिलाई के एक मजबूत टोट बैग में बदल सकते हैं; इसके लिए बस आपको टी-शर्ट की बाहें और गला काटकर निचले हिस्से में पट्टियाँ बनानी होती हैं और उन्हें मजबूती से गांठ बांधकर एक थैला तैयार करना होता है, जो खरीदारी या लाइब्रेरी के लिए एकदम सही है। इसी तरह, पास्ता या जैम के खाली कांच के जारों को धोकर और उन पर एक्रिलिक या चॉकबोर्ड पेंट का उपयोग करके उन्हें एक सुंदर डेस्क ऑर्गनाइज़र का रूप दिया जा सकता है। ये जार आपके पेन, मार्कर और उलझने वाली केबल्स को व्यवस्थित रखने के लिए बेहतरीन समाधान हैं। इन छोटे लेकिन प्रभावी रचनात्मक बदलावों के जरिए आप न केवल अपने कमरे को एक व्यक्तिगत पहचान दे सकते हैं, बल्कि कैंपस में कचरे को कम करने की दिशा में एक जिम्मेदार और प्रेरणादायक कदम भी उठा सकते हैं।

अक्सर छात्रों को लगता है कि 'ईको-फ्रेंडली' उत्पाद महंगे होते हैं, लेकिन असल में सस्टेनेबिलिटी का मतलब ही 'किफायत' है। पुराने सामान का पुन: उपयोग करने से आप न केवल पैसे बचाते हैं, बल्कि अपनी कल्पना शक्ति का भी विस्तार करते हैं। आप अपने दोस्तों के साथ मिलकर **'अपसाइकिलिंग वर्कशॉप'** का आयोजन कर सकते हैं, जहाँ हर कोई अपने पुराने सामान को एक-दूसरे के साथ बदलकर कुछ नया बना सके। यह न केवल सामाजिक मेलजोल का एक तरीका है, बल्कि कैंपस में एक जागरूक समुदाय बनाने की दिशा में भी एक बड़ा कदम है।

अंत में, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि सस्टेनेबिलिटी के लिए हमें पूर्णता (perfection) की नहीं, बल्कि प्रयास की आवश्यकता है। आज आपका बनाया हुआ एक टी-शर्ट बैग कल सैकड़ों प्लास्टिक बैग्स का विकल्प बन सकता है। तो अगली बार जब आप कुछ फेंकने लगें, तो एक पल रुकें और सोचें—क्या यह किसी और रूप में काम आ सकता है?

"क्या आपने भी कुछ ऐसा बनाया है? अपनी फोटो और प्रस्ताव हमारे कॉलेज मैगजीन के हैंडल पर भेजें और कैंपस के 'ग्रीन हीरो' बनें!"

बबीता
बी०एस-सी ० षष्ठ सेमेस्टर

डर के आगे जीत है

(2)

स्टेज पर खड़े होकर हाथ-पाँव फूलना और गले का सूख जाना– यह कोई बीमारी नहीं, बल्कि दुनिया के सबसे आम डरों में से एक है जिसे **'ग्लोसोफोबिया'** कहते हैं। कॉलेज लाइफ में प्रेजेंटेशन से लेकर डिबेट तक, पब्लिक स्पीकिंग का सामना हर कदम पर होता है। अगर आपको भी माइक देखते ही पसीना आने लगता है, तो ये आसान और मज़ेदार तरीके आपके डर को 'कॉन्फिडेंस' में बदल सकते हैं:

'परफेक्ट' बनने की जिद छोड़ें

स्टेज फियर का सबसे बड़ा कारण यह डर है कि "लोग क्या कहेंगे अगर मैं अटक गया?" याद रखें, दर्शक आपकी गलतियाँ पकड़ने नहीं, बल्कि आपको सुनने आए हैं। अगर आप कोई शब्द भूल जाएं, तो बस मुस्कुराएं और आगे बढ़ें। आपकी मुस्कुराहट दर्शकों के साथ एक तुरंत कनेक्शन बना देती है।

शीशे के सामने 'सुपरहीरो' पोज

बोलने से 5 मिनट पहले अकेले में 'पावर पोज' (जैसे सुपरमैन या वंडर वुमन खड़ा होता है) ट्राई करें। वैज्ञानिक रूप से यह साबित हो चुका है कि सही बॉडी लैंग्वेज आपके शरीर में टेस्टोस्टेरोन बढ़ाती है और तनाव कम करती है। इसके बारे में अधिक जानने के लिए आप Amy Cuddy की TED Talk देख सकते हैं।

दर्शकों में 'दोस्त' ढूंढें

पूरे हॉल को देखने के बजाय, भीड़ में 2-3 ऐसे चेहरे ढूंढें जो मुस्कुरा रहे हों या आपकी बात पर सिर हिला रहे हों। उनसे आँखें मिलाकर बात करें, जैसे आप अपने किसी दोस्त को कहानी सुना रहे हों। इससे आपका नर्वस सिस्टम शांत रहता है।

गहरी सांस का जादू (4-7-8 तकनीक)

स्टेज पर जाने से ठीक पहले 4 सेकंड तक नाक से सांस लें, 7 सेकंड तक रोकें और 8 सेकंड में धीरे-धीरे छोड़ें। यह तकनीक आपके दिमाग को सिग्नल देती है कि सब कुछ नियंत्रण में है। आप Healthline पर इस ब्रीदिंग तकनीक के और भी फायदे पढ़ सकते हैं।

तैयारी ही सबसे बड़ी जीत है

विषय की अच्छी जानकारी आपके डर को आधा कर देती है। अपने भाषण की शुरुआत और अंत को अच्छी तरह याद कर लें। अगर शुरुआत दमदार होगी, तो बाकी का भाषण अपने आप पटरी पर आ जाएगा। अभ्यास के लिए आप Orai जैसे AI ऐप्स का इस्तेमाल कर सकते हैं जो आपकी स्पीच क्वालिटी को फीडबैक देते हैं।

निष्कर्ष

पब्लिक स्पीकिंग एक ऐसी स्किल है जो रातों-रात नहीं आती, बल्कि बार-बार कोशिश करने से निखरती है। अगली बार जब कॉलेज में कोई मौका मिले, तो डर के बावजूद 'हाँ' कहें, क्योंकि डर के आगे ही जीत (और तालियाँ) हैं!

मीनू
बी०एस-सी ० षष्ठ सेमेस्टर

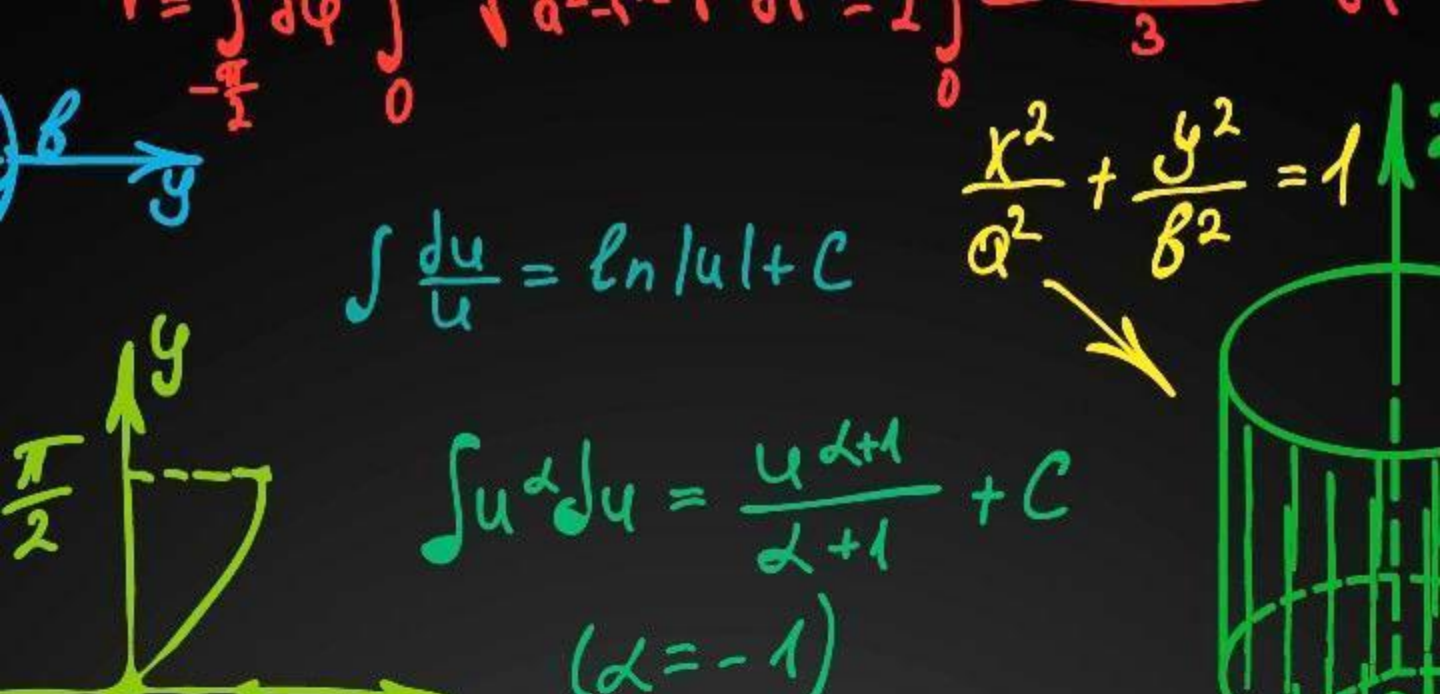

The Beauty and Importance of Mathematics (3)

By Dikshit Pandey
Ph.D. Scholar, Mathematics
Govt. P.G. College, Manila

Mathematics is often described as the language of the universe. From simple counting to complex equations, mathematics helps us understand patterns, structures, and relationships in the world around us. It plays a fundamental role in science, technology, engineering, economics, and daily life.

In everyday situations, mathematics helps us manage money, measure time, calculate distances, and make logical decisions. Beyond practical applications, mathematics develops critical thinking and problem-solving skills. It trains the mind to think clearly, logically, and systematically.

In higher education and research, mathematics becomes even more powerful. Advanced fields such as algebra, analysis, topology, and applied mathematics contribute to innovations in artificial intelligence, data science, physics, and engineering. Without mathematics, modern technological progress would not be possible.

In conclusion, mathematics is not just a subject studied in school; it is a powerful tool that shapes our understanding of reality. Its beauty lies in its precision, logic, and universal applicability. For students and researchers alike, mathematics opens the door to deeper knowledge and discovery.

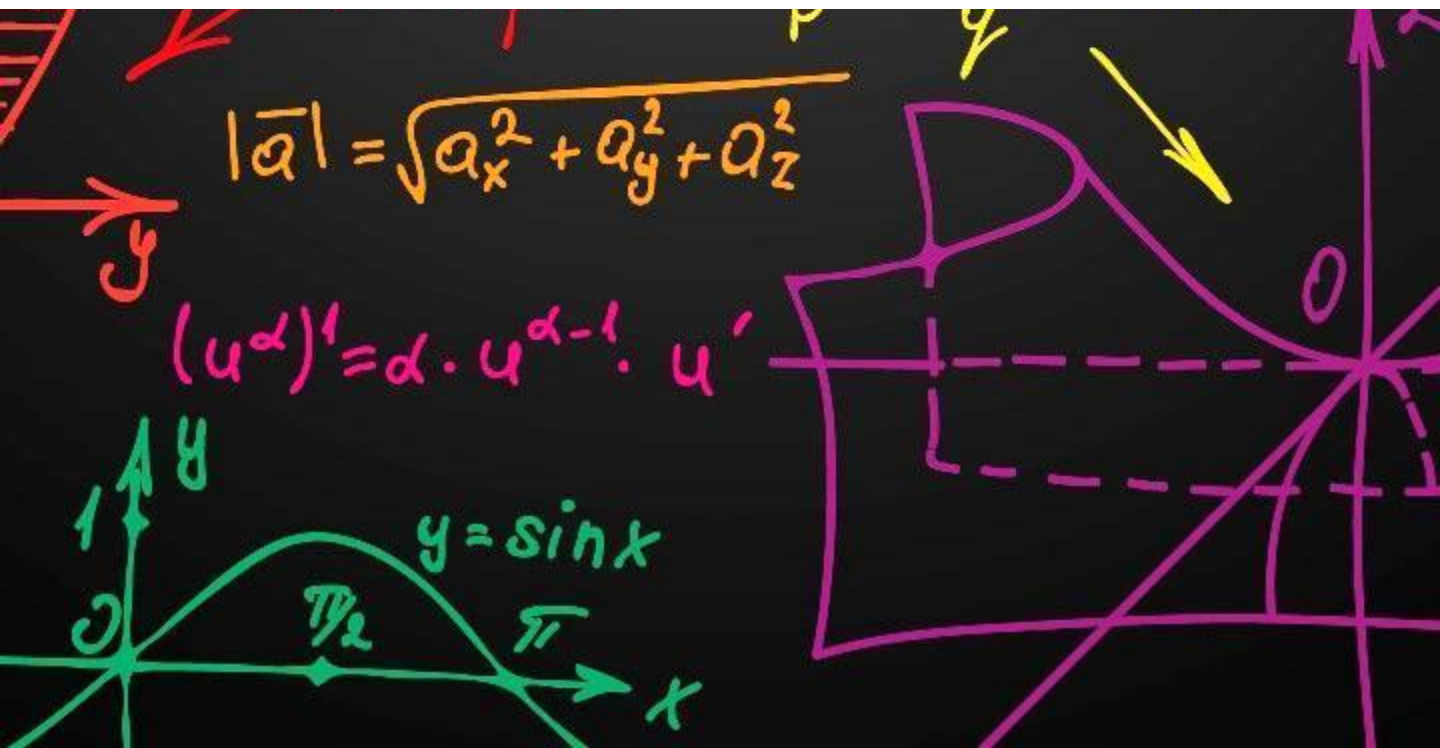

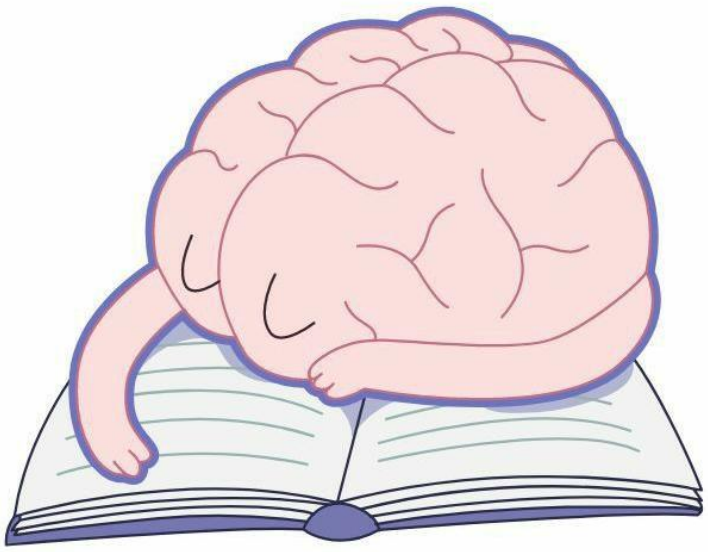

The Invisible Battle: Why Doing Academic Research in India Is Harder Than It Looks

Jay Paliwal
Ph.D. Scholar, Mathematics
Govt. P.G. College, Manila

1 Introduction

In today's India, we proudly celebrate remarkable milestones in research and technology—from historic lunar missions and satellite launches from Sriharikota to high-profile AI summits in New Delhi. These achievements symbolize national progress and scientific excellence. However, behind these headline successes lies a quieter, less visible reality. Many researchers continue to struggle with delayed fellowships, limited access to quality journals, administrative burdens, inadequate infrastructure, and career uncertainty. While the nation applauds breakthroughs, the everyday challenges faced by scholars often go unnoticed.

2 Unequal Access of Knowledge

Throughout history, it has often been said that knowledge should be free and shared for the collective advancement of humanity. However, in practice, this ideal remains largely rhetorical. Beyond a few premier institutions, many universities and research centers lack access to high-impact journals, as most scholarly publications remain locked behind expensive paywalls. Ironically, researchers from these institutions are still expected to publish in reputed international journals and compete on a global stage. This expectation creates a structural imbalance: how can scholars compete internationally when they must rely on outdated resources or limited open-access materials, which may not always represent the latest or highest-quality research? Without equitable access to knowledge, the call for global competitiveness risks becoming aspirational rather than attainable.

3 Delayed Funding

One of the major challenges facing academic research in India is the inadequate allocation of funds. The overall expenditure on research and development remains significantly lower compared to many developed nations. Even when research projects are approved, the disbursement of funds is often delayed and the sanctioned amount is frequently insufficient to meet the actual requirements of the project. Such financial uncertainty disrupts research planning, delays procurement of essential resources, and adversely affects the continuity of work. Furthermore, researchers are required to adhere to strict time constraints despite these funding limitations. The pressure to complete projects within fixed deadlines, combined with irregular financial support, often compromises the quality and depth of research output. Importantly, this issue is not confined to state universities alone; many central universities also face similar administrative and financial bottlenecks. As a result, researchers across institutions struggle to produce work that can compete at the global level.

4 Industry—Academia Gap

Industries consider Indian research to be too theoretical and not sufficiently practical; hence, there is little to no collaboration. To some extent, this is true because if a student wants to work hands-on with a particular machine but it is not available in their institute, how will they be able to work on real-world problems? Even in highly publicized innovation events, instances have occurred where institutions replicated foreign models instead of presenting original work. This reflects deeper structural gaps in research infrastructure and industry linkage.

5 Career Uncertainty

After completing their hard and laborious research work, many students remain uncertain about their next step. For the sake of stability and secu- rity, some decide to pursue a postdoctoral position, while others apply for teaching roles. However, in India, there are far too many qualified candidates and far too few available positions. Due to this in- tense competition and limited opportunities, many students hesitate to choose research as a long-term career.

6 Structural Reforms

If India aims to establish itself as a global research leader, reforms must address deep structural gaps. Broader national access to international journals would reduce academic inequality across institu- tions. The timely release of research funds and fellowships would provide much-needed stability to research careers. Stronger partnerships between academia and industry could help translate theoret- ical knowledge into practical applications. Reduc- ing administrative burdens would free valuable in- tellectual energy for innovation and inquiry. Clear, transparent, and stable academic career pathways would also help retain talented researchers within the system. Most importantly, research must be treated not merely as a ranking indicator, but as a long-term national investment in intellectual capi- tal and sustainable development.

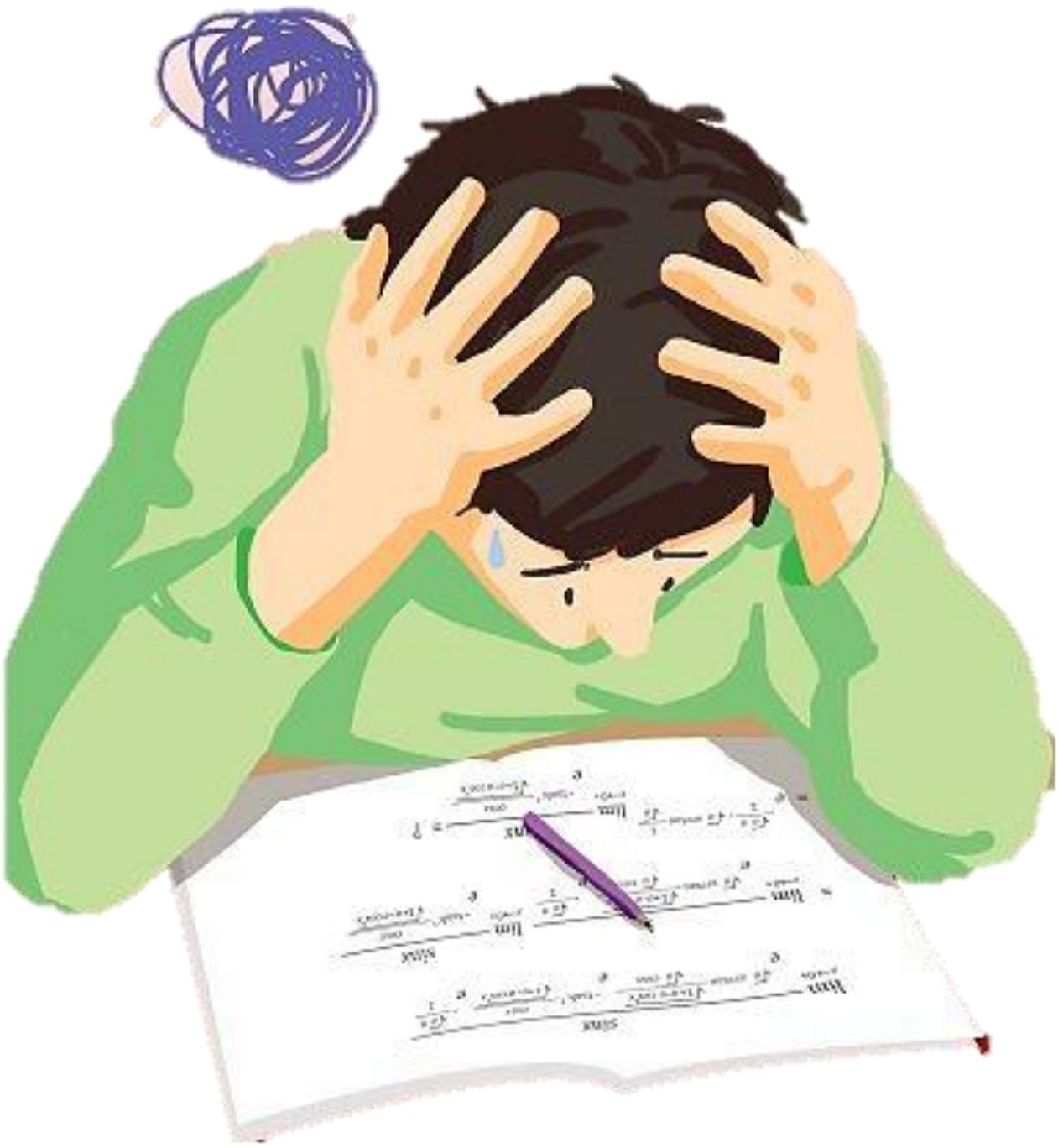

प्राध्यापक
लेख अनुभाग

हिमालय की गोद में छिपा प्राचीन रहस्य

लाखामंडल

यमुना नदी जिस क्षेत्र के सभी जीवों का पालन-पोषण करती है और जहाँ का वातावरण स्वर्ग जैसा आनंद देता है, वही भव्य गाँव लाखामंडल है। गाँव के स्त्री-पुरुष ढोल (ढाक) की ताल पर नृत्य करते हुए इसकी महिमा गाते हैं। देहरादून से मसूरी,कैंपटी फॉल, यमुना ब्रिज और बर्नीगाड होते हुए लगभग 120 किलोमीटर दूर स्थित लाखामंडल कभी केदारखंड का एक समृद्ध और वैभवशाली राज्य था। यमुना और रिखनाड नदी के संगम पर बसा यह स्थल अपने ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व के कारण विशेष आकर्षण रखता है। मान्यता है कि महाभारत काल में यहाँ लाक्षागृह (लाख का महल) स्थित था, इसी कारण इसका नाम "लाखामंडल" पड़ा। एक अन्य धारणा के अनुसार यहाँ मिली लाखों मूर्तियों के कारण इसे यह नाम दिया गया। जो स्थान कभी वैभव का केंद्र था, वह आज मात्र 45-50 घरों के छोटे से गाँव के रूप में रह गया है।

यह स्थल मुख्य रुप से शिव को समर्पित मंदिर के कारण प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि पांडवों ने यहाँ लाखों शिवलिंग स्थापित किए थे। खुदाई में आज भी अनेक शिवलिंग मिलते रहते हैं, इसी कारण इसका नाम "लाखामंडल" पड़ा। मुख्य मंदिर के प्रवेश द्वार पर मानव और दानव रूपी द्वारपालों (द्वाररक्षकों) की खंडित मूर्तियाँ हैं। मान्यता थी कि इस क्षेत्र में किसी की मृत्यु होने पर उसके शरीर को इन दोनों मूर्तियों के सामने रखा जाता था। 'मानव' आत्मा को शुद्ध करता था और 'दानव' की सहायता से वह आत्मा वैकुंठ (स्वर्ग) को चली जाती थी।

प्रसिद्ध शिवलिंग

मन्दिर में उपस्थित अवशेष

कहा जाता है कि मुख्य शिवलिंग की स्थापना युधिष्ठिर (धर्मराज) ने की थी। इसके चारों ओर चार आसन थे, जहाँ भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ने छोटे शिवलिंग स्थापित किए थे। ये शिवलिंग आज मंदिर कार्यालय में सुरक्षित रखे गए हैं। मंदिर परिसर में विभिन्न आकार के अनेक शिवलिंग बिखरे पड़े हैं। इनमें से एक विशेष शिवलिंग ग्रेफाइट पत्थर का है, जो गीला होने पर दर्पण की तरह आसपास का प्रतिबिंब दिखाता है। इसके आधार पर शक्ति की आकृति उकेरी गई है। इसे वर्ष 2007 में खुदाई में निकाला गया था।

महाभारत कथा के अनुसार पांडवों को जलाकर मारने के लिए जो लाक्षागृह (लाख का महल) बनाया गया था, उसकी नींव यहाँ मानी जाती है। पास में एक गुफा के अवशेष भी बताए जाते हैं, जिसे स्थानीय लोग "धुंधी ओडारी" (धुंधली गुफा) कहते हैं। मान्यता है कि पांडव इसी गुफा से निकलकर बद्रीनाथ और केदारनाथ की ओर गए और अंततः स्वर्गारोहण किया। मुख्य मंदिर पश्चिम की ओर मुख किए हुए है। पश्चिम दिशा में यमुना बहती है, जो अपने किनारों पर बसे जौनपुर और जौनसार गाँवों को अलग करती है। एक लोकप्रिय कथा के अनुसार एक गाय प्रतिदिन मंदिर में आकर शिवलिंगों की पूजा करती थी। कहा जाता है कि उसके खुरों के निशान आज भी पत्थरों और आसपास की पहाड़ियों पर दिखाई देते हैं। इस प्रकार लाखामंडल एक ऐसा स्थान है जहाँ इतिहास, आस्था और पौराणिक कथाएँ एक साथ जीवंत हो उठती हैं।

श्री नरेश लाल
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

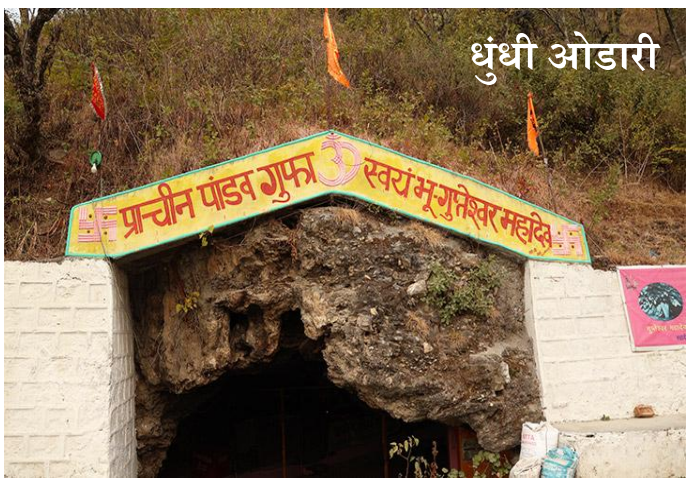

5G दिमाग 2G जुबान

मेरा दिमाग है *'सुपर-कंप्यूटर'*,
अंग्रेज़ी इसकी पक्की यार है।
अंदर तो मैं *'शेक्सपियर'* हूँ,
हर ग्रामर एकदम तैयार है।

पर ये ज़ुबान बड़ी पुरानी है,
शायद इसका सॉफ्टवेयर स्लो है।
दिमाग भेजता है एचडी वीडियो,
पर आवाज़ आती जैसे *'रेडियो'* है।

दिमाग में चलती 5G स्पीड,
ज़ुबान पर आकर अटक जाती है।
बढ़िया वाली इंग्लिश मेरी,
बस अंदर ही अंदर मुस्कुराहट बन रह जाती है।

मत सोचो कि तुम कमज़ोर हो,
बस आवाज़ और सोच का मेल बढ़ाना है।
धीरे-धीरे ही सही, पर एक दिन,
इस ज़ुबान को भी *'स्मार्टफोन'* बनाना है।

द्वारा: डॉ० शैफाली सक्सेना

THE CHABAHAR CHECKMATE

(9)

Dr. Kavinder Bhatt
Assistant Professor
Department of English

The escalation in the Middle East is no longer a distant conflict confined to news channels. When a foreign submarine torpedoes a naval ship just off the coast of Sri Lanka, the shockwaves reach every corner of the subcontinent. The sinking of the Iranian frigate IRIS Dena is particularly jarring. Only days before meeting a quiet and tragic end in the Indian Ocean, that ship and its crew were guests of our own navy in Visakhapatnam, participating in multilateral exercises. The sudden loss of life and the brazen nature of the attack in our maritime backyard serve as a stark reminder that the theatre of war has expanded dangerously close to home.

At the very centre of this geopolitical storm, caught between shifting alliances and economic survival, lies the Chabahar Port.

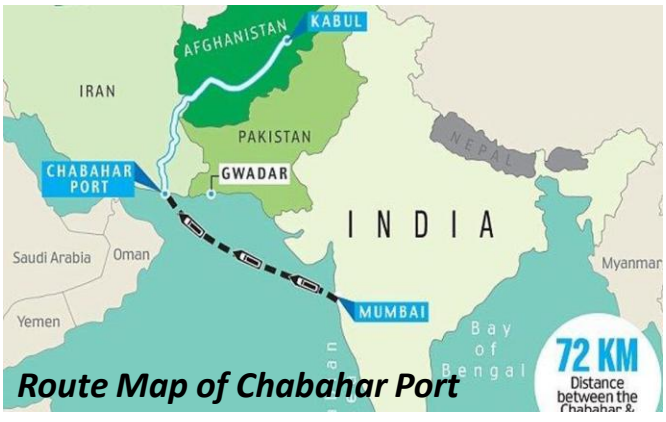

Route Map of Chabahar Port

For over two decades, this port on the Gulf of Oman was hailed as our strategic masterstroke. It was the physical manifestation of our foreign policy ambitions. The vision was bold and necessary. By developing Chabahar, India secured a deepwater gateway to Afghanistan, Central Asia, and eventually Europe, completely bypassing the hostile land routes of Pakistan. It was our answer to the encroaching presence of other regional powers and a crucial node in the International North South Transport Corridor. We poured millions into its development, supplying heavy equipment, building terminals, and envisioning a thriving trade network that would elevate our economic standing on the global stage.

Just recently, that dream seemed completely secure. We signed a ten-year agreement to operate the port, signalling a long-term commitment to the region and solidifying our intent to be a major maritime player. Chabahar was supposed to be the anchor of our western maritime strategy. It was a place where our diplomatic persistence had finally paid off, creating a tangible asset that promised immense economic dividends. The port successfully handled millions of tonnes of cargo, facilitating everything from humanitarian aid shipments destined for Kabul to vital commercial trade coordinating with Moscow. Engineers and planners envisioned a bustling hub of activity that would forever alter the balance of power in the Arabian Sea, giving us unprecedented leverage and access to markets that were previously locked behind complex political barriers.

Then the geopolitical landscape fractured entirely. The catastrophic events of late February and early March have completely rewritten the rules of engagement. The targeted assassination of the Iranian supreme leader in Tehran and the subsequent retaliatory strikes have plunged the entire region into a devastating and unpredictable war. Washington and its allies have made their stance abundantly clear, and they have backed their aggressive military actions with crushing economic ultimatums. The looming threat of severe financial penalties and steep tariffs on any nation doing business with Tehran has forced a rapid and incredibly uncomfortable recalibration in New Delhi. Our policymakers were suddenly faced with an impossible situation, watching years of careful negotiation evaporate overnight as the drums of war grew louder.

The evidence of this pivot is quietly hidden in plain sight within the recent Union Budget. Observers and economic analysts quickly noticed a glaring omission. There were zero new funds

allocated for the development of the port for the upcoming fiscal year. Instead, the government disbursed the remaining balance of its previous financial commitments. This move looks less like a continuation of a grand strategy and more like a calculated exit. By paying off the agreed sums, we fulfill our contractual obligations on paper while effectively halting our operational involvement. We are stepping back from the very project we spent decades trying to build.

This is the Chabahar checkmate. We are trapped on a board where every available move comes with unacceptable casualties. If we stay and defy the sanctions, we risk our vital economic ties with the West. The United States remains one of our largest trading partners and a crucial source of technology and defence cooperation. Facing punitive tariffs would cripple our domestic growth and alienate our partners in the Quad. However, by walking away, we surrender our most significant strategic foothold in the Middle East. We validate the criticism that our foreign policy is dictated by external pressures rather than sovereign interests. Our departure leaves a vacuum that other powers will gladly fill, and it deeply strains our historical and cultural ties with the Iranian people.

The silence from the highest levels of our government reflects the agonizing nature of this dilemma. There are no easy press releases to write when you are forced to abandon a flagship initiative. The diplomatic tightrope has simply snapped. We are witnessing the limits of our much-touted strategic autonomy. The ability to maintain friendships with opposing factions works beautifully in peacetime, but it crumbles the moment those factions declare total war on one another. We cannot buy oil from the Gulf, seek defence pacts with Washington, and build ports in Iran all at the same time anymore. The world has forced us to choose, and our choice appears to be a quiet retreat.

You might wonder why a maritime conflict and a stalled port project matter to the everyday student or local resident here in the hills of Uttarakhand. It is easy to feel disconnected from global trade routes when you are surrounded by the Himalayas and focused on local academic pursuits or village life. But the realities of economics ignore geography. The closure of shipping lanes and the ensuing chaos in the energy markets will inevitably lead to a surge in global fuel prices. Every commodity that makes its way up the mountain roads of Kumaon depends on diesel. When transportation costs rise, the price of basic groceries, construction materials, and everyday essentials will spike in local markets from Pithoragarh to Almora.

Beyond the economics, the human cost is incredibly local and deeply felt. Many families in our districts rely heavily on remittances from relatives working in the Gulf. The destabilization of the entire Middle East directly threatens their livelihoods and physical safety. It brings the profound anxiety of a foreign war directly into our homes and college campuses. Students are left worrying about their older siblings and parents overseas instead of focusing on their studies or future careers. It turns a geopolitical chess match into a deeply personal crisis for thousands of families in our region.

Chabahar Port remains physically untouched by the missiles and torpedoes. It stands fully constructed, equipped with massive cranes and modern infrastructure, looking out over the water. Yet it is completely paralyzed by the invisible forces of global politics. It serves as a monumental testament to the fragility of international ambitions. We played a long and patient game, carefully advancing our pieces across the board over twenty years. But in the end, the board itself was flipped. As we process the unfolding tragedies of this new war and mourn the lives lost so close to our shores, we must also reflect on what this means for our place in the world. The era of playing every side has ended, and the consequences of our new reality will shape our policies and our daily lives for a generation.

WHY SATELLITES MUST CONSIDER RELATIVITY

When Einstein Guides Your GPS

(11)

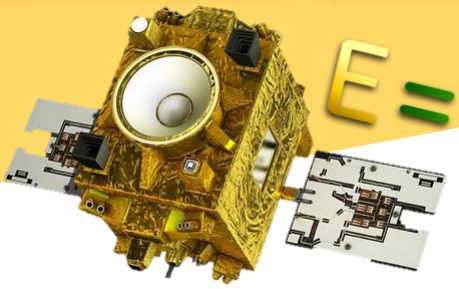

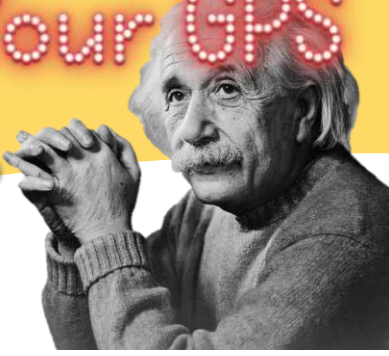

Imagine this: you're using Google Maps to find a café, and your phone tells you to turn right. It feels simple. But behind that calm voice lies a mind-bending truth — your location is calculated using ideas from Albert Einstein's relativity.

Yes, the same theory that talks about bending space and slowing time is quietly working above your head in orbit.

The Big Idea: Time Is Not the Same Everywhere

In school, we're taught that time is constant — one second is one second. But according to Einstein's theory of relativity, time is flexible. There are two key effects satellites must deal with:

1. Special Relativity (Speed Changes Time): According to Einstein's special relativity, when something moves very fast, its clock ticks more slowly compared to a stationary observer. GPS satellites orbit Earth at about 14,000 km/h. That's incredibly fast! Because of this speed, time on a satellite slows down slightly compared to time on Earth.

2. General Relativity (Gravity Changes Time): Einstein's general relativity says gravity also affects time. The stronger the gravity, the slower time moves. Satellites orbit about 20,000 km above Earth, where gravity is weaker than on the surface. So, their clocks actually tick faster than clocks on Earth.

The Surprising Result: Time Disagrees by Microseconds

These two effects compete:

- Speed makes satellite clocks run slower.
- Weaker gravity makes satellite clocks run faster.

When combined, the gravity effect is stronger. So satellite clocks tick faster than Earth clocks by about 38 microseconds per day. That sounds tiny— but in GPS terms, it's huge.

Because GPS works by measuring the time signals take to travel from satellites to your phone. Even a tiny timing error causes a big position error.

If relativity corrections were ignored?

Your GPS would drift by about 10 kilometers per day. Within minutes, your navigation system would become useless.

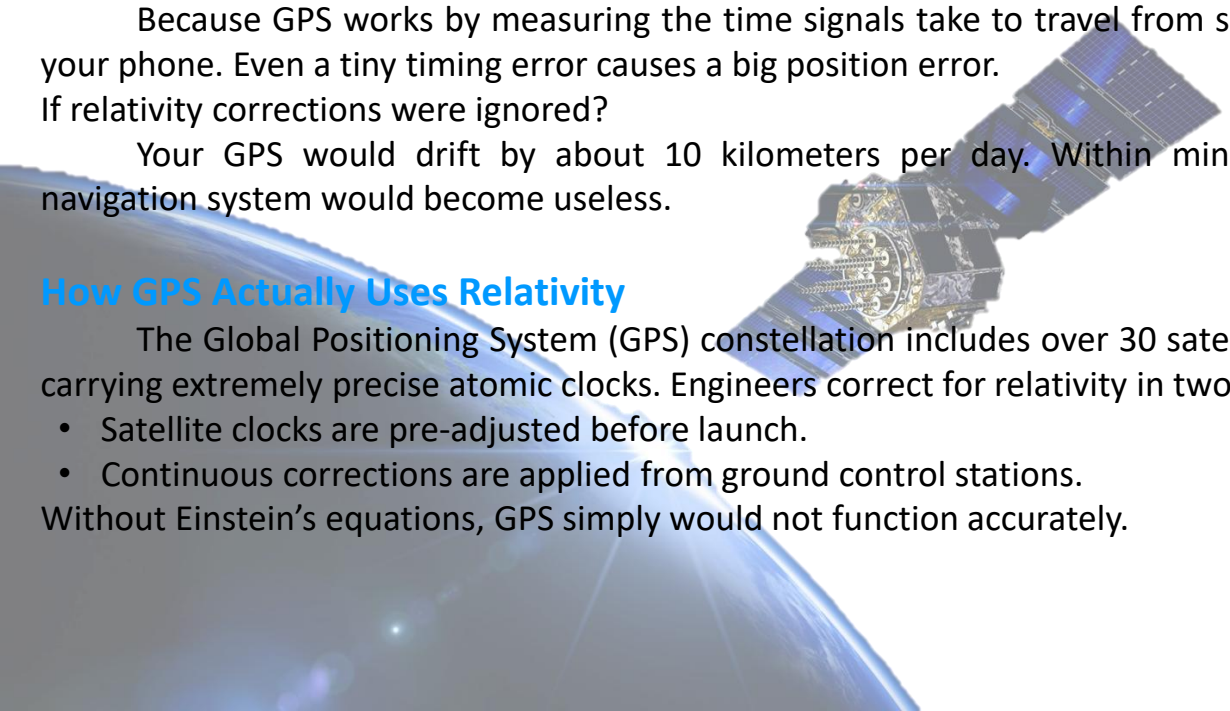

How GPS Actually Uses Relativity

The Global Positioning System (GPS) constellation includes over 30 satellites, each carrying extremely precise atomic clocks. Engineers correct for relativity in two ways:

- Satellite clocks are pre-adjusted before launch.
- Continuous corrections are applied from ground control stations.

Without Einstein's equations, GPS simply would not function accurately.

A Real-Life Example of Einstein's Genius

When Einstein published his relativity theories in 1905 and 1915, there were no satellites, no smartphones, no space missions. His ideas seemed abstract— even philosophical.

Yet today:

- Aviation depends on GPS.
- Military navigation depends on GPS.
- Banking networks use precise satellite timing.
- Ride-sharing apps rely on satellite signals.

All because time is not universal.

Why This Matters for Science Students?

Relativity teaches us something powerful:

The universe does not behave according to "common sense." Satellites must consider relativity not because physicists love complicated math— but because nature demands it. It's a reminder that:

- Fundamental research matters.
- Abstract theories can become practical tools.
- Physics shapes modern technology.

The Beautiful Irony

Every time you check your location, order food, or track a package, you are unknowingly trusting Einstein.

Relativity is not just a chapter in a textbook.

It's orbiting above you right now.

Final Thought

Next time your GPS works perfectly, take a moment to appreciate this:

Space bends time.

Gravity shifts seconds.

And satellites must obey the strange rules of the universe.

Because in space, even time refuses to stay simple.

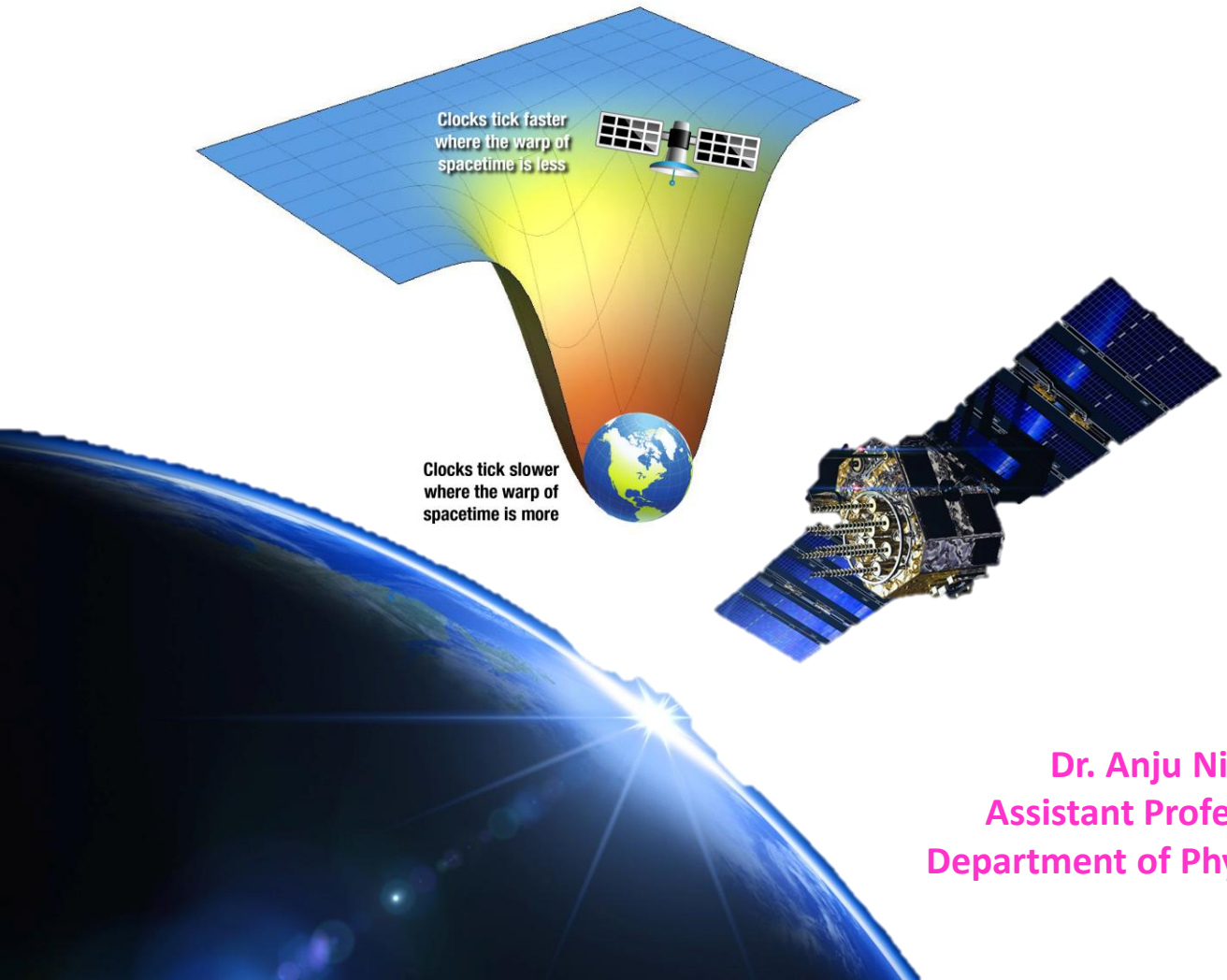

Dr. Anju Nigam
Assistant Professor
Department of Physics

HAMPI
THE GOLDEN GHOST OF THE FORGOTTEN EMPIRE

Hampi is more than just a destination; it is a sprawling open-air museum where every boulder and pillar tells a story of a glorious past; a geological fever dream, where the earth has exhaled a sea of rusty boulders, and a fallen empire has breathed life into them. My visit to this **UNESCO World Heritage Site** felt like stepping back into the 14th century, into the heart of the once-mighty Vijayanagara Empire (once a glittering jewel), a city so wealthy that diamonds were sold by the kilo on its streets. To truly capture Hampi is to describe a place where history is written in granite and the landscape feels like a playground for the gods. Below is an enhanced, deep-dive narrative of a journey through the **"*City of Victory*."**

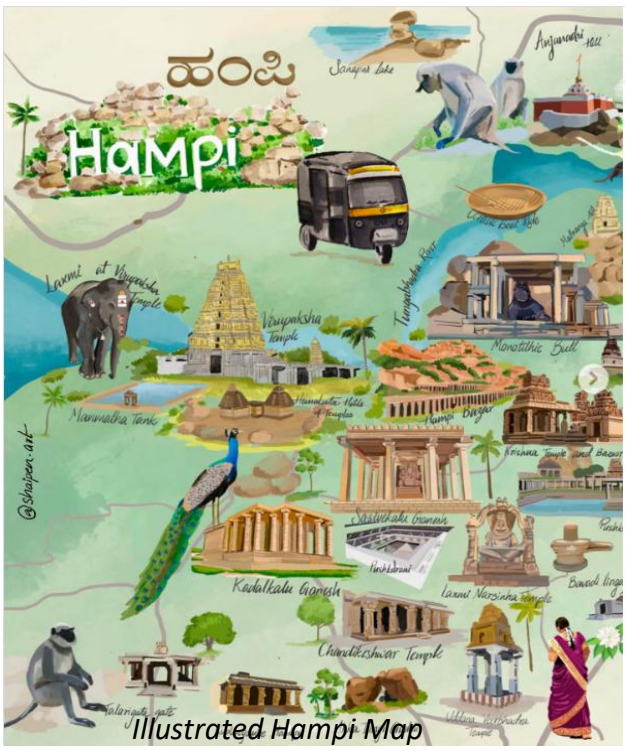

Illustrated Hampi Map

The Labyrinth of Legends: The Sacred Centre

My journey began at the Virupaksha Temple, the spiritual heartbeat of Hampi, dating back to 7th century. Its sky-piercing **Raja gopuram** (a 50-metre-high, nine-storeyed) acts as a sentinel, guarding centuries of devotion. The northern edge along the Tungabhadra River houses the religious lifeblood of the city. A small chamber behind the sanctum displays a natural **pinhole camera effect**, projecting an inverted shadow of the main tower onto the inner wall. **Sacred Residents:** The temple is home to Lakshmi, the temple elephant, often seen taking morning baths in the nearby Tungabhadra River.

Virupaksha Temple

Kadalekalu Ganesha

- **The Hemakuta Hill:** Dotted with pre-Vijayanagara temples, these structures feature sloping stone roofs designed to withstand heavy monsoon rains. It offers the best vantage point for the Virupaksha Temple complex.
- **Monolithic Giants:** Hampi is home to breathtaking singular stone carvings. Of all the monolithic wonders I encountered the regal aura of **Kadalekalu Ganesha** (4.5-meter high), carved directly into a massive granite boulder on the northeastern slope of Hemkuta Hill and housed in a large open hall (mandapa) supported by tall, slender granite pillars.
- Walking further, I encountered the **Ugra Narasimha** (Laxmi Narasimha). This isn't just a statue; it is a 6.7-metre-high scream in stone, of the man-lion incarnation of Vishnu with protruding eyes, broken hand of Goddess Lakshmi resting on his back and missing roof. Carved from a single block of granite in 1528, the deity's bulging eyes and terrifying posture capture a moment of divine fury frozen in time.

Ugra Narsimha

- Nearby sits a 3-meter-high **Badavilinga**, a large Shiva Linga constantly submerged in water via an ancient irrigation canal of Tungabhadra River.
- **The Courtesans' Street:** Located in front of the Achyutaraya Temple, this was once a bustling market where precious stones and silks were traded openly, reflecting the empire's immense wealth.

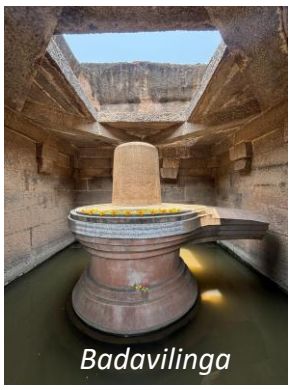
Badavilinga

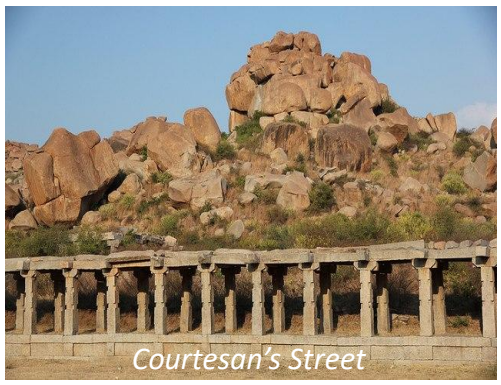
Courtesan's Street

The Royal Centre: Civil Engineering & Defense

Moving south, the architecture shifts from the spiritual to the functional and defensive.

- **The Stepped Tank (Pushkarni):** This perfectly symmetrical black schist tank was discovered during excavations in the 1980s. Each stone is marked with a character, indicating it was "pre-fabricated" and assembled like a 3D puzzle—a marvel of medieval modular construction.

Pushkarni

- **Aqueducts and Water Systems:** Hampi's ruins reveal an advanced network of stone channels that brought water from the river to the Royal Enclosure, feeding the baths and gardens through gravity-fed hydraulics.
- **Lotus Mahal:** A stunning blend of Hindu and Indo-Islamic architecture with symmetrical arches. A two-storeyed summer pavilion featuring lotus-bud arches and an early form of natural air conditioning via water pipes.
- **Elephant Stables:** Eleven massive domed chambers that once housed the empire's royal war elephants.
- **Hazara Rama Temple:** This was the private temple for the kings.

Its exterior walls function like a stone comic book, with bas-reliefs depicting the Ramayana in meticulous detail across multiple tiers.

Lotus Mahal

Elephant Stables

Hazara Rama Temple

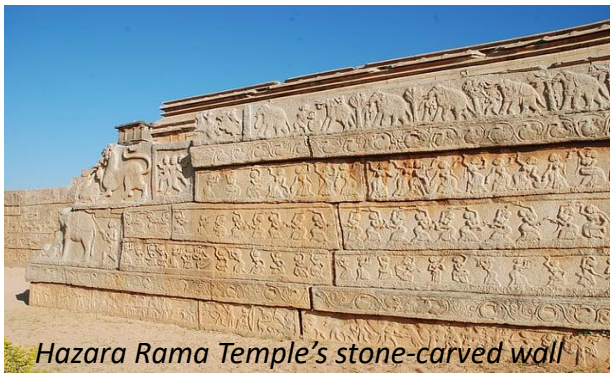
Hazara Rama Temple's stone-carved wall

Anegundi: The Living Heritage

Across the river lies Anegundi, a village older than Hampi itself, believed to be the mythical monkey kingdom of Kishkindha from the Ramayana.

- **Anjanadri Hill:** Reaching the top requires climbing **575 steps**. It is revered as the **birthplace of Lord Hanuman** and provides a 360-degree view of the jagged horizon.
- **Pampa Sarovar:** A sacred pond mentioned in ancient epics, located near the Sanapur Dam, which is now a popular spot for cliff jumping and quiet reflection away from the main ruins.

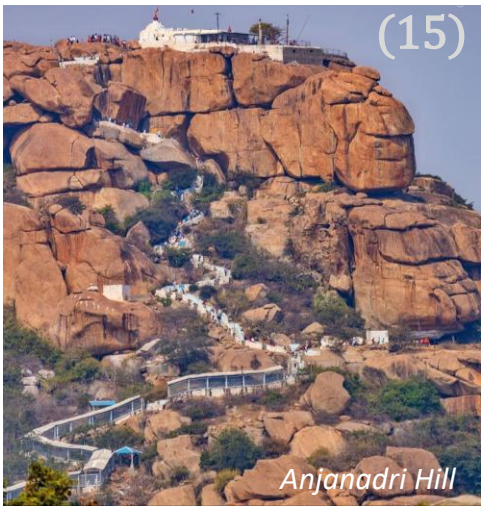
Anjanadri Hill

Cultural Immersion & Logistics

- **Hampi Utsav:** If visiting in January or February, the Hampi Utsav transforms the ruins with light shows, folk music, and traditional wrestling matches.
- **Gastronomy:** While the main ruins are strictly vegetarian, local spots like Mango Tree have become institutions, serving thalis on banana leaves to travelers from across the globe.

The most rewarding way to see the details is by bicycle or moped. You can rent these at the Hampi Bazaar to navigate the 25-square-kilometre site at your own pace.

Architectural Crescendo: The Vitthala Complex

The Vitthala Temple represents the peak of **Vijayanagara craftsmanship**.

- **The Stone Chariot:** An iconic granite shrine dedicated to **Garuda**, featured on the Indian ₹50 banknote. Its wheels were once functional and could rotate, though they are now fixed to prevent damage.
- **Musical Pillars:** The temple's Maha Mandapa contains **56 "*SaReGaMa*" pillars**. These solid granite columns emit distinct musical notes—resembling percussion, string, or wind instruments—when gently tapped.

The Stone Chariot

Musical "SaReGaMa" pillars

The Echo of Talikota: An Empire's Twilight

The tragedy of Hampi lies in the abruptness of its silence. In 1565, following the catastrophic Battle of Talikota, the "City of Victory" met a harrowing end.

History tells us that for six months, the victorious sultanates sought to systematically dismantle the city. They decapitated statues, set fire to the wooden palaces, and tried—often in vain—to crush the granite spirit of the temples.

Today, when you see the charred marks on the pillars or the missing limbs of the stone deities, you aren't just looking at "ruins." You are looking at the scars of history. The city didn't fade away; it was frozen in its moment of maximum glory, turned into a granite ghost overnight.

Conclusion: The Eternal Resonance

My visit to Hampi was more than a sightseeing tour; it was a lesson in the fragility of greatness. Walking through the bazaar where horses were once traded for gold, now replaced by the rustle of dry grass, is a humbling experience.

Hampi teaches you that stone is more patient than man. Empires rise, kings fall, and armies march, but the Granite Symphony of the Tungabhadra valley remains. As I left, looking back at the silhouette of the Virupaksha temple against the starlit sky, I realized that Hampi isn't dead. It lives on in the "SaReGaMa" of the musical pillars, in the stubborn grip of the banyan trees on ancient walls, and in the hearts of every traveler who leaves a piece of their soul among its boulders.

A Journey by:
Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

In a groundbreaking move that bridges the gap between high science and public awareness, Kerala has officially named Bacillus subtilis as its State Microbe. While most states celebrate majestic elephants or vibrant flowers, Kerala is looking through the microscope to honor an organism that, despite its size, carries the weight of an entire ecosystem on its shoulders.

Why Bacillus subtilis? The "Good Guy" of the Germ World

Choosing a state microbe isn't just a quirky trivia fact; it's a strategic nod to the "One Health" approach—the idea that human health is inextricably linked to the health of animals and the environment.

Here is why Bacillus subtilis earned the crown:

- **The Ultimate Bio-Shield:** In agriculture, this bacterium is a hero. it colonizes plant roots and forms a physical "bio-film" that prevents harmful pathogens from attacking. It's essentially a natural vaccine for crops, reducing the need for chemical pesticides.
- **The Fermentation Master:** If you enjoy fermented foods, you likely owe a debt to this microbe. It is the primary driver behind Natto (a Japanese superfood) and plays a significant role in various traditional fermented soy products across Asia.
- **A "Living Pharmacy":** B. subtilis is a prolific producer of antibiotics and enzymes. In fact, it produces a natural antibiotic called Bacitracin, which helps keep harmful infections at bay.
- **Climate Resilience:** Because it can form endospores (a dormant, tough-as-nails shell), it can survive extreme droughts and heat. As the world warms, these microbes help soil stay fertile and resilient against climate stress.

The "One Health" Strategy: Beyond the Title

The declaration, made alongside the launch of the Centre of Excellence in Microbiome (CoEM), isn't just symbolic. It marks a shift in how India approaches public health and technology:

- **Combating Superbugs:** By studying how "good" bacteria like B. subtilis compete with "bad" bacteria, researchers hope to find new ways to fight Antimicrobial Resistance (AMR).
- **Waste Management:** These bacteria are experts at breaking down organic matter. Kerala plans to leverage this for more efficient waste degradation and composting systems.
- **Economic Engine:** The state aims to attract biotech startups focused on probiotics, nutraceuticals, and bio-fertilizers, turning the microbiome into a pillar of the local economy.

A Quick Comparison: The State Icons of Kerala

Category	Icon	Significance
State Animal	Indian Elephant	Power and Heritage
State Microbe	*Bacillus subtilis*	Sustainability and Innovation
State Bird	Great Hornbill	Biodiversity and Forest Health

The Bigger Picture: A National First

By becoming the first state to take this step, Kerala joins a prestigious global club. Oregon in the USA was one of the first to name a state microbe (*Saccharomyces cerevisiae* or Brewer's Yeast). Kerala's choice, however, focuses heavily on environmental and agricultural rejuvenation, setting a template for other Indian states to follow.
Through the newly established Centre of Excellence in Microbiome (CoEM), the state is moving beyond theory to high-impact industrial and environmental applications.

The Industrial Blueprint: How Kerala is Putting Microbes to Work

The state's strategy focuses on transforming this bacterium into "economic assets" through several key sectors:

Next-Gen Agriculture & Bio-Fungicides:

B. subtilis is being commercialized as a natural bio-fungicide to replace chemical pesticides. It targets common diseases like Downy Mildew and Leaf Blight by secreting secondary metabolites that physically destroy harmful pathogens.

In the Kuttanad region, "No Pesticide Rice Farming" using these microbes has already shown yield increases of 15-20%.

Advanced Health & Probiotics:

Kerala is developing pharmaceutical-grade spore-based probiotics that are uniquely resistant to stomach acid, making them highly effective for gut health supplements.
Researchers are exploring the bacterium as a vehicle for mucosal vaccines and even as a delivery system for cancer-fighting drugs.

Sustainable Infrastructure (Self-Healing Concrete):

One of the most futuristic applications involves mixing *B. subtilis* spores into concrete. When cracks form, the bacteria "wake up," consume nutrients in the mix, and produce calcium carbonate (limestone) to naturally seal the cracks, extending the life of buildings.

Aquaculture & Fisheries:

The state is leveraging specific strains, such as *B. subtilis* Ba37 (isolated from the Cochin mangroves), to improve the survival rates and growth of farmed fish like *Etroplus suratensis* (Pearl Spot), reducing the industry's reliance on antibiotics.

Eco-Mining & Bioremediation:

B. subtilis is capable of biosorption, allowing it to soak up toxic heavy metals like nickel from polluted water or even help extract rare earth elements from rocks more cleanly than traditional mining.

A Hub for "Deep Tech" Startups

To drive these innovations, the CoEM has exchanged MoUs with the Kerala Startup Mission. This partnership aims to incubate biotech companies at the Bio 360 Life Sciences Park, turning microbiome research into a "made-in-Kerala" brand of sustainable products.
Kerala is not just celebrating a microbe; it's building an entire infrastructure to ensure that farmers and researchers can harness its potential.

Empowering the Fields: How Kerala Farmers Benefit

For local farmers, *Bacillus subtilis* is moving from the lab to the soil through dedicated distribution and training networks:

- **Direct Access to Bio-Inputs:** Farmers can obtain microbial formulations through the Department of Agriculture and specialized research stations. A single kit often includes bio-fertilizers, seeds, and essential tools to encourage chemical-free farming.

- **Hands-on Training:** Regular workshops, particularly in districts like Wayanad, teach farmers the precise application methods for bio-agents to maximize crop yield and restore soil health.

- **Economic Impact:** Shifting to these microbial solutions is projected to increase farm income by ₹10,000–₹15,000 annually per farmer through reduced chemical costs and a 15–20% boost in yield for staple crops like paddy and vegetables.
- **The Academic Frontier:** Courses and Opportunities.

The Centre of Excellence in Microbiome (CoEM) is designed as a "living lab" for students and professionals:

- **Specialised Training:** The center offers three-month student and technician training programs that include a monthly stipend and official certification from National Sector Skill Councils.

- **Microbiome Commercialisation Programme:** Targeted at fresh PhD graduates, this initiative provides expert mentorship and state-of-the-art facilities to help researchers turn their scientific discoveries into market-ready products.

- **Webinars and Workshops:** CoEM hosts regular "Emerging Voices in Microbiome Science" sessions and 3-day career-focused webinars to guide graduates toward opportunities in entrepreneurship and deep-tech research.

- **Research Fellowships:** Aspiring scientists can apply for Post Doctoral Fellowships offering up to ₹60,000 per month for two years to pursue advanced research in domains like human, plant, or aquatic microbiomes.

Microbiome Hub: Bio 360 Life Sciences Park

The permanent home for these activities is the Bio 360 Life Sciences Park in Thonnakkal. This hub serves as an incubator where startups can establish facilities to develop everything from gut-health probiotics to self-healing concrete using B. subtilis.
"Microbes are the oldest inhabitants of our planet. By recognizing them, we are acknowledging the foundation of life itself."— Insight from the CoEM Launch.

Dr. Shaiphali Saxena
Assistant Professor
Department of Botany

समसामयिकी

फरवरी अंक

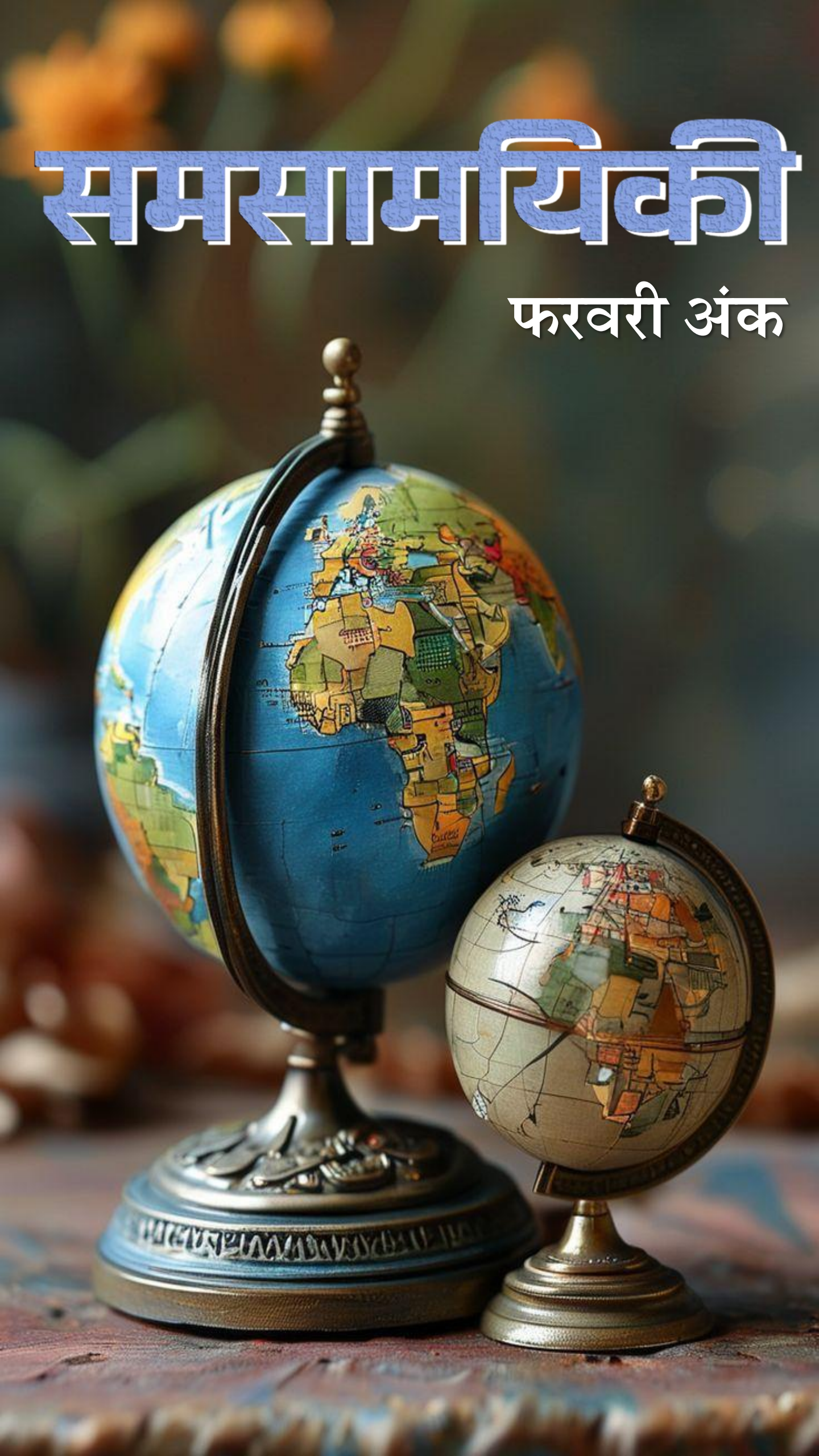

समसामयिकी

- हाल ही में अमेरिका ने भारत पर टैरिफ कितने प्रतिशत कर दिया है? 18
- पंचायत एडवांसमेंट इंडेक्स (PAI) 2.0 में प्रथम स्थान किस राज्य को मिला? त्रिपुरा
- Airports Authority Board की पहली महिला सदस्य कौन बनी हैं? निवेदिता दुबे
- 'Pilloo AI' किस राज्य में लॉन्च हुआ है? आंध्र प्रदेश
- दुनिया का पहला प्राइवेट स्पेस स्टेशन 'Haven-1' कहाँ विकसित हो रहा है? अमेरिका
- Crawford Prize 2026 किस भारतीय मूल के वैज्ञानिक को मिला? वीरभद्रन रामनाथन
- भारत की पहली LNG-डीजल डुअल-फ्यूल DEMU ट्रेन कहाँ शुरू हुई? अहमदाबाद
- इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट में 'एआई इम्पैक्ट स्टार्टअप' पुस्तक का विमोचन किसके द्वारा किया गया? इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
- भारत में पहले यूरोपीय कानूनी गेटवे कार्यालय का उद्घाटन कहाँ किया गया है? नई दिल्ली
- तमिलनाडु से GI टैग प्राप्त सलेम साबूदाना की पहली खेप किस देश को निर्यात की गई है? अमेरिका
- पैरा बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप में पुरुष एकल SL3 श्रेणी में स्वर्ण पदक किसने जीता? प्रमोद भगत
- बीबीसी इंडियन स्पोर्ट्सवुमन ऑफ द ईयर अवॉर्ड्स 2025 में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड किसे दिया गया है? पी.टी. उषा
- छात्रों की मदद के लिए किस संस्थान द्वारा विकसित SATHEE पोर्टल को एआई इम्पैक्ट समिट में राष्ट्रीय मान्यता मिली है? HT मद्रास
- अमेरिका-इंडिया कनेक्ट पहल की घोषणा किस कंपनी ने की है? गूगल
- भारतीय नौसेना द्वारा आयोजित इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू 2026 की आधिकारिक थीम क्या रखी गई है? यूनाइटेड थ्रू ओशंस एंड ब्रिजेस ऑफ फ्रेंडशिप
- हाल ही में स्वदेश निर्मित Td वैक्सीन को कहाँ लॉन्च किया गया? कसौली
- जम्मू-कश्मीर के नए राज्य चुनाव आयुक्त के रूप में किसने शपथ ली है? आर.के. गोयल
- माइक्रोसॉफ्ट गेमिंग का नया उपाध्यक्ष किसे नियुक्त किया गया है? आशा शर्मा
- देश के पहले रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (RRTS) का उद्घाटन कहाँ किया गया? गाजियाबाद
- भारत ने दुर्लभ पृथ्वी खनिजों के सहयोग के लिए किस देश से समझौता किया? ब्राजील
- उत्तर प्रदेश का पहला सेमीकंडक्टर पार्क कहाँ स्थापित किया जा रहा है? ग्रेटर नोएडा
- BSF ने बॉर्डरमेन मैराथन 2026 कहाँ आयोजित की? जैसलमेर
- AI4 Agri 2026 शिखर सम्मेलन कहाँ आयोजित हुआ? नई दिल्ली
- राज्य निर्वाचन आयुक्तों का राष्ट्रीय गोलमेज सम्मेलन कहाँ आयोजित होगा? भारत मंडपम
- CSIR ने TKDL के लिए हाल ही में किस देश के INPI के साथ समझौता किया है? ब्राजील
- वर्ल्ड ओशन साइंस कांग्रेस 2026 की मेजबानी कौन सा राज्य कर रहा है? गोवा
- सानिया मिर्ज़ा के बाद W100 ITF टूर्नामेंट के फाइनल में पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला कौन बनीं? ऋतुजा भोसले
- फरवरी–मार्च 2026 में वज्र प्रहार अभ्यास का कौन सा संस्करण आयोजित किया जाएगा? 18वां
- 79वें बाफ्टा पुरस्कार में किस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता? ओपेनहाइमर
- दिल्ली सरकार ने सड़क दुर्घटना पीड़ितों की मदद करने वालों के लिए कौन सी योजना शुरू की है? राह वीर योजना

- किस स्वदेशी लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जैसलमेर एयरबेस पर उड़ान भरी? प्रचंड
- समकालीन सुरक्षा चुनौतियों पर चर्चा के लिए 10वां सेना प्रमुख सम्मेलन कहाँ आयोजित किया गया? बेंगलुरु
- एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने महिला एथलीटों के लिए कौन सा टेस्ट अनिवार्य किया है? SRY जीन टेस्ट
- 16वें वित्त आयोग ने शहरी निकायों के अनुदान का हिस्सा बढ़ाकर कितना कर दिया है? 45%
- राजस्थान सरकार ने माउंट आबू का नाम बदलकर क्या रखने की घोषणा की है? राज आबू
- DRDO द्वारा परीक्षण VSHORADS प्रणाली किस प्रकार की सुरक्षा प्रणाली है? मैन-पोर्टेबल एयर डिफेंस सिस्टम
- हाल ही में चर्चा में रही 'अमोंडावा जनजाति' का संबंध किस क्षेत्र से है? अमेज़न बर्षावन
- किस झील ने जमी हुई सतह पर 21 किमी हाफ मैराथन के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है? डल झील

फरवरी माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रमुख प्रेरणादायी हस्तियाँ

फरवरी माह में जन्मी उत्तराखण्ड की प्रेरणादायी हस्तियाँ

1. बद्रीदत्त पाण्डे (15 फरवरी, 1882)

जन्म स्थान: कनखल (हरिद्वार)

हरिद्वार के कनखल में जन्मे पांडे जी को **'कुर्मांचल केसरी'** के नाम से जाना जाता है। उन्होंने कुली-बेगार जैसी दमनकारी प्रथा के खिलाफ सफल आंदोलन का नेतृत्व किया था। वे एक निडर पत्रकार और इतिहासकार भी थे, जिन्होंने 'कुमाऊँ का इतिहास' जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी।

2. उर्वशी रौतेला (25 फरवरी, 1994)

जन्म स्थान: कोटद्वार (पौड़ी गढ़वाल) / हरिद्वार

उर्वशी एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की मॉडल और अभिनेत्री हैं। वे अपनी सुंदरता और स्टाइल के लिए वैश्विक स्तर पर जानी जाती हैं। उनके पिता मनवर सिंह और माँ मीरा सिंह उत्तराखंड से ही हैं। उन्होंने 2013 में *सिंह साहब द ग्रेट* से बॉलीवुड में कदम रखा। वे एकमात्र ऐसी भारतीय महिला हैं जिन्होंने दो बार मिस यूनिवर्स इंडिया का खिताब जीता है। वे *सनम रे*, *पागलपंती* और कई सुपरहिट म्यूजिक वीडियो का हिस्सा रही हैं।

3. स्नेह राणा (18 फरवरी, 1994)

जन्म स्थान: सिनाओला, देहरादून

स्नेह भारतीय महिला क्रिकेट टीम की एक बेहतरीन ऑलराउंडर (दाएं हाथ की ऑफ-स्पिनर और बल्लेबाज) हैं। एक साधारण किसान परिवार से निकलकर भारतीय टीम तक पहुंचने का उनका सफर बहुत प्रेरणादायक है। वे उत्तराखंड की पहली महिला क्रिकेटर हैं जिन्होंने टेस्ट डेब्यू पर ही अर्धशतक लगाया और 4 विकेट चटकाए। वे महिला प्रीमियर लीग (WPL) में गुजरात जायंट्स की कप्तानी भी कर चुकी हैं।

4. परिमार्जन नेगी (9 फरवरी, 1993)

जन्म स्थान: उत्तराखंड (मूल निवासी)

परिमार्जन भारतीय शतरंज (Chess) जगत का एक बहुत बड़ा नाम हैं। उन्होंने बहुत कम उम्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का मान बढ़ाया। 2006 में मात्र 13 साल की उम्र में वे दुनिया के दूसरे सबसे कम उम्र के ग्रैंडमास्टर (GM) बने थे। उन्हें भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में वे अमेरिका में कंप्यूटर साइंस के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

5. तृप्ति डिमरी (23 फरवरी, 1994)

जन्म स्थान: रुद्रप्रयाग (गढ़वाल)

तृप्ति वर्तमान में बॉलीवुड की 'नेशनल क्रश' मानी जाती हैं। उन्होंने 2017 में फिल्म *पोस्टर बॉयज* से शुरुआत की थी, लेकिन उन्हें असली पहचान *लैला मजनू* और *बुलबुल* जैसी फिल्मों से मिली। फिल्म *एनिमल* (2023) की सफलता के बाद वे भारत की सबसे चर्चित अभिनेत्रियों में से एक बन गई हैं।

6. एकता बिष्ट (8 फरवरी, 1986)

जन्म स्थान: अल्मोड़ा

अल्मोड़ा की रहने वाली एकता भारतीय महिला क्रिकेट टीम की एक प्रमुख स्पिन गेंदबाज हैं। वे उत्तराखंड से भारतीय टीम में जगह बनाने वाली **पहली महिला क्रिकेटर** हैं। उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से पहाड़ की बेटियों के लिए खेल के नए रास्ते खोले हैं।

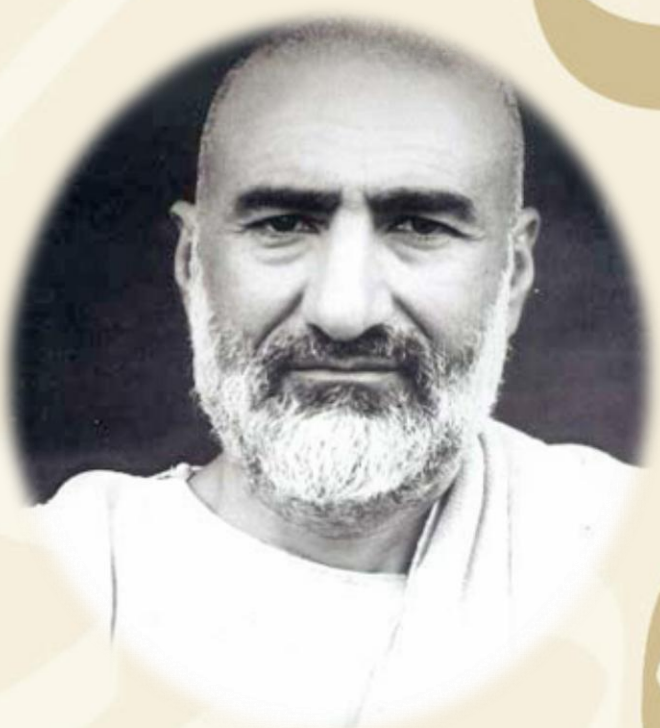

फरवरी माह के प्रेरणादायी व्यक्तित्व

एक जीवन परिचय

खान अब्दुल गफ्फार खान और अल्मोड़ा

सीमान्त गाँधी का हिमालई कारावास

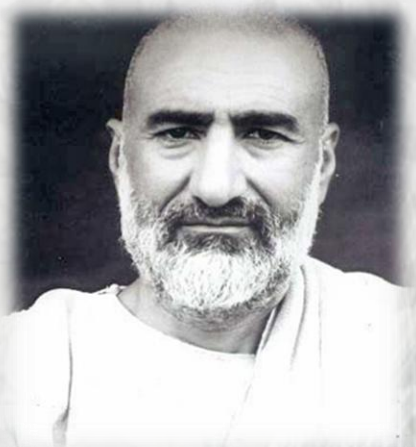

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में खान अब्दुल गफ्फार खान, जिन्हें श्रद्धा से 'बच्चा खान', 'बादशाह खान' और 'सीमान्त गाँधी' कहा जाता है, का व्यक्तित्व एक ऐसे प्रकाश स्तंभ के समान है जिसने हिंसा और प्रतिशोध की संस्कृति में रचे-बसे उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त (NWFP) को अहिंसा के गाँधी वादी सांचे में ढाल दिया। उनका जीवन संघर्ष केवल उनकी अपनी मातृभूमि तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उनके कारावास की गाथाओं ने भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों को एक सूत्र में पिरोया। उत्तराखण्ड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित ऐतिहासिक नगरी अल्मोड़ा और वहां की जिला जेल इस महान नायक की साधना के एक अत्यंत महत्वपूर्ण कालखंड की साक्षी रही है। खान अब्दुल गफ्फार खान और अल्मोड़ा का सम्बन्ध मात्र एक बंदी और कारागार का नहीं था, बल्कि यह दो भिन्न संस्कृतियों 'पश्तून और पहाड़ी' के बीच उस साझा संवेदना का मिलन बिंदु था, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को एक समावेशी और व्यापक स्वरूप प्रदान किया।

खान अब्दुल गफ्फार खान: वैचारिक पृष्ठभूमि और अहिंसा का उदय

6 फरवरी 1890 को पेशावर के निकट उत्मानजई (वर्तमान पाकिस्तान) में एक समृद्ध और प्रभावशाली मोहम्मदजई पश्तून परिवार में जन्मे अब्दुल गफ्फार खान का बचपन से ही झुकाव सामाजिक सुधार और शिक्षा की ओर था। उनके पिता, बहराम खान, एक ऐसे जमींदार थे जो अपनी धार्मिकता और शांतिप्रियता के लिए जाने जाते थे, जो उस समय के पश्तून समाज में प्रचलित कबीलाई रंजिशों और 'बदल' (प्रतिशोध) की परंपरा के ठीक विपरीत था। गफ्फार खान की शिक्षा एक मिशनरी स्कूल में हुई जहाँ उनके गुरु रेवरेंड विग्राम ने उनमें मानवता की सेवा और शिक्षा के महत्व का बीज बोया।

1910 में, मात्र 20 वर्ष की आयु में, उन्होंने अपने गृह नगर में एक मदरसा खोलकर पश्तूनों के बौद्धिक जागरण का कार्य प्रारम्भ किया। हालांकि, ब्रिटिश अधिकारियों ने शिक्षा के इस प्रयास को औपनिवेशिक सत्ता के लिए खतरा माना और 1915 में उनके स्कूल को बलपूर्वक बंद कर दिया गया। यह दमन ही उनके पूर्णकालिक राजनीतिक जीवन का प्रस्थान बिंदु बना। 1919 के रॉलेट एक्ट के विरुद्ध हुए विरोध प्रदर्शनों में उनकी भागीदारी ने उन्हें पहली बार जेल की सलाखों के पीछे पहुँचाया, जो उनके जीवन भर चलने वाले कारावासों की एक लंबी श्रृंखला की पहली कड़ी थी।

पश्तून संस्कृति में अहिंसा का प्रयोग और खुदाई खिदमतगार

1929 में बच्चा खान ने 'खुदाई खिदमतगार' (ईश्वर के सेवक) संगठन की स्थापना की, जिसे 'लाल कुर्ती' (Surkh Posh) आन्दोलन के रूप में भी ख्याति मिली। इस आन्दोलन का उद्देश्य पश्तूनों में व्याप्त आपसी झगड़ों को समाप्त करना, उन्हें शिक्षित करना और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक अहिंसक मोर्चा बनाना था। यह एक ऐतिहासिक चमत्कार ही था कि जिस पश्तून समुदाय को विश्व के सबसे दुर्जेय योद्धाओं में गिना जाता था, उन्होंने गफ्फार खान के आह्वान पर हथियारों का त्याग कर अहिंसा की शपथ ली। गफ्फार खान का मानना था कि अहिंसा कायरता नहीं, बल्कि वीरों का सर्वोच्च गुण है। उन्होंने इस्लाम की शिक्षाओं को धैर्य और सहनशीलता के साथ जोड़कर पश्तूनों को यह समझाया कि "सच्चा मुसलमान वह है जो कभी किसी का बुरा नहीं चाहता"। इस दर्शन ने ब्रिटिश साम्राज्य को चकित कर दिया, क्योंकि वे हिंसक विद्रोहों को दबाने के अभ्यस्त थे, लेकिन एक निहत्थे और अहिंसक पठान का सामना करना उनके लिए एक नई और जटिल चुनौती थी।

अल्मोड़ा और पेशावर कांड: एक ऐतिहासिक अंतर्संबंध

अल्मोड़ा और खान अब्दुल गफ्फार खान के बीच का ऐतिहासिक सेतु 23 अप्रैल 1930 के 'पेशावर कांड' (किस्सा ख्वानी बाजार हत्याकांड) के दौरान निर्मित हुआ। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान जब बच्चा खान को गिरफ्तार किया गया, तो पेशावर में विशाल अहिंसक भीड़ ने इसका विरोध किया। ब्रिटिश अधिकारियों ने भीड़ पर गोलियां चलाने का आदेश दिया जिसमें सैकड़ों निहत्थे पठान शहीद हुए। इस घटना का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब कैप्टन रिकेट ने रॉयल गढ़वाल राइफल्स की एक टुकड़ी को निहत्थे पठानों पर मशीनगन से फायरिंग करने का हुक्म दिया। हवलदार मेजर चंद्र सिंह गढ़वाली के नेतृत्व में गढ़वाली सैनिकों ने "हम निहत्थों पर गोली नहीं चलाते" कहकर अपने ही अधिकारियों के आदेश को मानने से इनकार कर दिया।

यह घटना मात्र एक सैन्य अनुशासनहीनता नहीं थी, बल्कि यह भारतीय राष्ट्रवाद के उस उदय का प्रमाण थी जिसने क्षेत्रीय और सांस्कृतिक सीमाओं को तोड़ दिया था। गढ़वाली सैनिकों के इस साहस ने हिमालय की पहाड़ियों (अल्मोड़ा और गढ़वाल) और सीमान्त प्रान्त के पठानों के बीच एक अटूट भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित कर दिया। चंद्र सिंह गढ़वाली को बाद में कोर्ट-मार्शल के बाद लंबी सजा सुनाई गई और उन्हें भी अल्मोड़ा जेल में रखा गया। वर्षों बाद गफ्फार खान ने अल्मोड़ा और उत्तराखण्ड के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा था कि वे नेहरू से पहले चंद्र सिंह गढ़वाली से मिलने के इच्छुक थे।

अल्मोड़ा जिला जेल: औपनिवेशिक दमन और प्रतिरोध का केंद्र

अल्मोड़ा जिला जेल, जिसकी स्थापना 1872 में हुई थी यह उत्तराखण्ड की सबसे पुरानी जेलों में से एक है । यह जेल अल्मोड़ा की शांत पहाड़ियों के बीच स्थित एक ऐसी कठोर संरचना थी जहाँ ब्रिटिश सरकार उन राजनीतिक बंदियों को भेजती थी जिन्हें वे अपनी मुख्यधारा की राजनीति से दूर और एकांत में रखना चाहते थे। 152 वर्ष पुरानी इस जेल की दीवारें और छत आज भी उसी पुराने डिजाइन में मौजूद हैं, जो स्वतंत्रता संग्राम के अनगिनत संघर्षों की गवाह रही हैं ।

राजनीतिक बंदियों के लिए 'पहाड़ी प्रवास' का प्रशासनिक तर्क

ब्रिटिश सरकार द्वारा खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे नेताओं को सीमा प्रान्त से हटाकर अल्मोड़ा जैसी सुदूर जेलों में भेजने के पीछे एक सोची-समझी प्रशासनिक रणनीति थी। वे जानते थे कि उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त में बच्चा खान की उपस्थिति मात्र से ही पूरा प्रान्त उबल सकता था। उन्हें हजारीबाग (बिहार), साबरमती (गुजरात) और अंततः अल्मोड़ा (संयुक्त प्रान्त) जैसे क्षेत्रों में स्थानांतरित करना उनकी सामाजिक जड़ों को काटने का एक प्रयास था। अल्मोड़ा की ऊँचाई, वहाँ की ठंडी जलवायु और भाषा की भिन्नता किसी भी पश्तून के लिए एक बड़ी चुनौती थी। लेकिन जैसा कि गफ्फार खान ने स्वयं स्वीकार किया था, कारावास उनके लिए एक साधना बन चुका था। अल्मोड़ा जेल में उन्हें उस वार्ड में रखा गया था जो आज 'नेहरू वार्ड' के नाम से प्रसिद्ध है।

अल्मोड़ा जेल में बच्चा खान का प्रवास: 4 जून 1936 से 11 अगस्त 1936

ऐतिहासिक दस्तावेजों और जेल के अभिलेखों के अनुसार खान अब्दुल गफ्फार खान 4 जून 1936 को अल्मोड़ा जेल लाए गए और वे 11 अगस्त 1936 तक यहाँ बंदी रहे। यद्यपि यह प्रवास दो महीने से थोड़ा अधिक समय का था लेकिन यह उनके वैचारिक विकास और राष्ट्रीय नेतृत्व के साथ उनके संबंधों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। बच्चा खान जो अपनी लंबी कद-काठी (6 फीट 3 इंच) और मजबूत शरीर के लिए जाने जाते थे, जेल की कठोर परिस्थितियों के कारण काफी कमजोर हो गए थे। ब्रिटिश जेलों में उन्हें अक्सर बेड़ियों में रखा जाता था और उनके साथ एक सामान्य अपराधी की तरह व्यवहार किया जाता था। अल्मोड़ा में उन्हें एकांतवास (Solitary Confinement) में रखा गया था ताकि वे अन्य कैदियों को प्रभावित न कर सकें। उनकी दिनचर्या में सूत कातना (spinning), लिफाफे बनाना और गहन धार्मिक एवं राजनीतिक अध्ययन शामिल था। जेल में वे अक्सर अपनी प्रार्थनाओं में लीन रहते थे और अपने पश्तून भाइयों के भविष्य के लिए चिंतित रहते थे। उनके लिए जेल की दीवारें कभी उनकी आत्मा को कैद नहीं कर सकीं; वे अपनी कल्पना में हमेशा उत्मानजई की पहाड़ियों और अपने लोगों के बीच रहते थे।

नेहरू और गफ्फार खान: एक साझा विरासत

जवाहरलाल नेहरू और खान अब्दुल गफ्फार खान के बीच की मित्रता भारतीय इतिहास की सबसे सुंदर कहानियों में से एक है। नेहरू ने स्वयं अल्मोड़ा जेल में 28 अक्टूबर 1934 से 3 सितंबर 1935 तक लंबा समय बिताया था, जहाँ उन्होंने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा 'मेरी कहानी' (Toward Freedom) के महत्वपूर्ण अध्याय लिखे थे। यद्यपि 1936 के प्रवास के दौरान वे एक साथ जेल में नहीं थे, लेकिन अल्मोड़ा जेल ने उन दोनों को उसी वैचारिक धरातल पर खड़ा किया जहाँ वे भारत की धर्मनिरपेक्षता और समावेशी राष्ट्रवाद के स्तंभ बने। नेहरू ने गफ्फार खान के बारे में लिखा था कि "उनका कारावास मेरे हृदय में एक फाँस की तरह चुभता है"। बच्चा खान के लिए अल्मोड़ा का वह नेहरू वार्ड एक ऐसा स्थान था जहाँ वे अपने मित्र की वैचारिक उपस्थिति को महसूस कर सकते थे।

जेल में बौद्धिक और आध्यात्मिक संश्लेषण: गीता और कुरान का संगम

खान अब्दुल गफ्फार खान के व्यक्तित्व का एक अत्यंत प्रेरणादायक पक्ष उनका धार्मिक उदारवाद था। अल्मोड़ा और अन्य जेलों (जैसे पंजाब की गुजरात जेल और डेरा गाजी खान जेल) में बिताए गए समय का उपयोग उन्होंने विभिन्न धर्मों के ग्रंथों के अध्ययन के लिए किया। अल्मोड़ा जेल में बच्चा खान के प्रवास के दौरान, उन्होंने हिंदू धर्म की 'भगवद गीता' और सिख धर्म के 'गुरु ग्रंथ साहिब' का गहन अध्ययन किया। उन्होंने जेल में संस्कृत के विद्वानों से गीता के श्लोकों की व्याख्या सीखी और बदले में उन्हें कुरान की आयतें सिखाईं । यह उनके लिए मात्र एक बौद्धिक कसरत नहीं थी, बल्कि यह उनके उस विश्वास की पुष्टि थी कि सत्य और प्रेम किसी एक धर्म की बपौती नहीं हैं। जेल के उनके अनुभव बताते हैं कि उन्होंने "गीता और कुरान के बीच एक ऐसा सामंजस्य स्थापित किया था जिसने उन्हें सांप्रदायिक कट्टरता से कोसों दूर कर दिया था"। अल्मोड़ा की पहाड़ियों की शांति में उनके इन विचारों ने उन्हें एक 'राष्ट्रवादी मुसलमान' के रूप में और भी दृढ़ किया, जिसने बाद में विभाजन की विभीषिका के विरुद्ध

डटकर संघर्ष किया।

बच्चा खान ने अपनी आत्मकथा 'मेरा जीवन और संघर्ष' (My Life and Struggle) में उल्लेख किया है कि जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वयं को भविष्य के लिए तैयार करने हेतु एक प्रतीकात्मक 'संसद' भी बनाई थी। उन्होंने जेल के भीतर भी हिंदू, मुस्लिम और सिखों के बीच एकता को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक रसोई और प्रार्थना सभाओं का आयोजन किया। अल्मोड़ा का प्रवास उनके इन प्रयोगों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जहाँ उन्होंने पश्तूनों के लिए एक आधुनिक और न्यायपूर्ण समाज का सपना बुना था।

अल्मोड़ा की जनता और बच्चा खान का प्रभाव

यद्यपि गफ्फार खान का अल्मोड़ा प्रवास एक बंदी के रूप में था और वे बाहरी दुनिया से कटे हुए थे, लेकिन उनकी उपस्थिति की गूँज पूरे कुमाऊँ क्षेत्र में सुनाई देती थी। स्थानीय स्वतंत्रता सेनानी और अल्मोड़ा की जनता उन्हें एक देवतुल्य नायक के रूप में देखती थी। अल्मोड़ा के स्थानीय नेता जैसे हरगोविंद पंत, बद्री दत्त पांडे और विक्टर मोहन जोशी गफ्फार खान के साहस से अत्यधिक प्रेरित थे। वे अक्सर जेल के बाहर एकत्र होकर अपने नेताओं की खैरियत जानने का प्रयास करते थे। बच्चा खान की अहिंसक क्रांति ने पहाड़ी क्षेत्रों के युवाओं को यह संदेश दिया कि यदि पेशावर का एक लड़ाकू पठान अहिंसा अपना सकता है, तो पूरा देश एकजुट होकर ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंक सकता है। चन्द्र सिंह गढ़वाली के प्रति उनका सम्मान इतना गहरा था कि उन्होंने बाद में कई बार उत्तराखण्ड आने और उन सैनिकों से मिलने की इच्छा प्रकट की जिन्होंने उनके आन्दोलन को अपना समर्थन दिया था। यह सम्बन्ध दर्शाता है कि स्वाधीनता आन्दोलन केवल शहरों या राजधानियों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह अल्मोड़ा जैसे सुदूर अंचलों में भी समान तीव्रता के साथ धड़क रहा था।

आत्मकथा के पन्नों में अल्मोड़ा और कारावास का विवरण

गफ्फार खान की आत्मकथा 'मेरा जीवन और संघर्ष' (My Life and Struggle/Jamazband aur Jaddojehad) उनके जेल जीवन के अनुभवों का एक मार्मिक दस्तावेज है। यद्यपि यह पुस्तक उन्होंने 1965 में काबुल में निर्वासन के दौरान लिखवाई थी, लेकिन इसमें उनके अल्मोड़ा और अन्य जेलों के दिनों की स्मृतियाँ अत्यंत स्पष्ट हैं। आत्मकथा में वे वर्णन करते हैं कि कैसे ब्रिटिश सरकार उन्हें एक जेल से दूसरी जेल में स्थानांतरित करके मानसिक रूप से प्रताड़ित करना चाहती थी। वे लिखते हैं कि "जेल की दीवारें पश्तूनों के लिए सबसे बड़ी परीक्षा थीं, क्योंकि वे खुली हवा और पहाड़ों के आदी थे"। अल्मोड़ा की ठंडी जलवायु में उनके पुराने जख्म (जो जेलों में दी गई यातनाओं से मिले थे) अक्सर उभर आते थे, लेकिन उनकी आध्यात्मिक शक्ति उन्हें कभी टूटने नहीं देती थी। उन्होंने जेल के भीतर भी शिक्षा के प्रसार का कार्य जारी रखा। वे अनपढ़ कैदियों को पढ़ाते थे और उन्हें स्वावलंबन का महत्व समझाते थे। उनकी आत्मकथा दर्शाती है कि अल्मोड़ा का प्रवास उनके लिए केवल एक शारीरिक कैद नहीं थी, बल्कि यह उनके पश्तून राष्ट्रवाद को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने का एक अवसर था।

स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम वर्षों में, खान अब्दुल गफ्फार खान और उनके संगठन खुदाई खिदमतगार ने विभाजन का पुरजोर विरोध किया। जब कांग्रेस ने अंततः माउंटबेटन योजना के तहत विभाजन को स्वीकार कर लिया, तो गफ्फार खान को गहरा आघात लगा। उन्होंने कांग्रेस कार्यसमिति में भावुक होते हुए कहा था, "आपने हमें भेड़ियों के सामने फेंक दिया है"।

विभाजन के बाद उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त में हुए जनमत संग्रह (referendum) को उन्होंने यह कहकर बहिष्कार किया कि इसमें 'स्वतंत्र पख्तूनिस्तान' का विकल्प नहीं दिया गया था। उनकी यह पीड़ा अल्मोड़ा जेल में बुने गए उस सपने के विपरीत थी जहाँ वे एक अखंड, धर्मनिरपेक्ष और न्यायपूर्ण भारत की कल्पना करते थे।

विभाजन के बाद का संघर्ष

स्वतंत्रता के बाद गफ्फार खान का जीवन और भी कष्टपूर्ण रहा। पाकिस्तान सरकार ने उन्हें 'गद्दार' और 'भारतीय एजेंट' करार दिया और उन्हें अपने जीवन के 15 और वर्ष जेलों में बिताने पड़े। उन्हें नजरबंदी और निर्वासन का सामना करना पड़ा। लेकिन वे अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे और जीवन भर पश्तूनों के अधिकारों और भारत-पाक मित्रता के लिए आवाज उठाते रहे।

भारत रत्न और अल्मोड़ा की स्मृतियाँ

1987 में भारत सरकार ने खान अब्दुल गफ्फार खान को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। वे यह सम्मान पाने वाले पहले गैर-भारतीय नागरिक थे। उनकी अंतिम भारत यात्रा के दौरान, उन्होंने उन सभी स्थानों को याद किया जहाँ उन्होंने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था। अल्मोड़ा जेल आज भी उनके उस बलिदान की याद दिलाती है। जेल के रजिस्टर में आज भी उनका नाम और उनके प्रवास की तिथियाँ दर्ज हैं, जो किसी भी भारतीय के लिए गौरव का विषय हैं। उनकी मृत्यु 20 जनवरी 1988 को पेशावर में हुई और उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार उन्हें अफगानिस्तान के जलालाबाद में 'सुपुर्द ए ख़ाक' किया गया। उनकी शवयात्रा के दौरान भारत और पाकिस्तान दोनों ने अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं, जो उनके व्यक्तित्व की विराटता का प्रमाण था।

अल्मोड़ा जेल: विरासत, संरक्षण और उनका महत्व

वर्तमान में अल्मोड़ा जिला जेल को एक ऐतिहासिक स्मारक के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

जेल के भीतर स्थित 'नेहरू वार्ड' और वह कोठरी जहाँ गफ्फार खान ने समय बिताया था, उसे पर्यटकों और शोधकर्ताओं के लिए खोला गया है। जेल के भीतर बच्चा खान और नेहरू द्वारा उपयोग किए गए बर्तन, चरखा, स्टूल और उनकी चारपाई को अत्यंत सावधानी से सुरक्षित रखा गया है । ये वस्तुएं मात्र भौतिक पदार्थ नहीं हैं, बल्कि ये उस त्याग और सादगी की प्रतीक हैं जो स्वतंत्रता संग्राम के नायकों की पहचान थी। जेल प्रशासन और उत्तराखण्ड सरकार ने इन वार्डों को 'स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तीर्थ' के रूप में मान्यता दी है । हालांकि जेल की इमारतों की खस्ता हालत और बढ़ती कैदियों की संख्या के कारण इस विरासत के संरक्षण में कुछ चुनौतियां भी सामने आई हैं। इतिहासकारों का मानना है कि इस जेल को पूरी तरह से एक संग्रहालय में परिवर्तित किया जाना चाहिए ताकि इसकी ऐतिहासिक महत्ता अक्षुण्ण रहे।

खान अब्दुल गफ्फार खान और अल्मोड़ा का सम्बन्ध भारतीय इतिहास का वह अध्याय है जो हमें बताता है कि स्वतंत्रता का संघर्ष केवल भौगोलिक सीमाओं का विस्तार नहीं था, बल्कि यह विचारों का एक महान महाकुंभ था। एक पश्तून नेता का हिमालय की वादियों में कैद होना और वहाँ गीता के श्लोकों में शांति खोजना, उस 'अखंड भारत' की सच्ची तस्वीर पेश करता है जिसे बच्चा खान और गाँधी जी ने देखा था। अल्मोड़ा जेल की वे कालकोठरियाँ आज भी चीख-चीख कर यह कहती हैं कि अहिंसा और सत्य का मार्ग काँटों भरा हो सकता है, लेकिन वही अंततः मानवता की जीत सुनिश्चित करता है। खान अब्दुल गफ्फार खान ने अल्मोड़ा में जो समय बिताया, वह हमें धैर्य, धार्मिक सद्भाव और निस्वार्थ देशप्रेम की प्रेरणा देता है। वे आज भी सीमान्त गाँधी के रूप में हमारे बीच जीवित हैं और अल्मोड़ा की धरती उनके उस महान बलिदान की गवाह बनकर आने वाली पीढ़ियों को सत्य के मार्ग पर चलने का संदेश दे रही है ।

डॉ० जितेन्द्र प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग

फरवरी माह के महत्वपूर्ण दिवस

फरवरी माह के महत्वपूर्ण दिवस

क्र० सं०	तिथि	दिवस का नाम	विवरण
01	1 फरवरी	भारतीय तटरक्षक दिवस	भारतीय तटरक्षक दिवस 1977 में भारतीय तटरक्षक बल की स्थापना की याद में मनाया जाता है। यह दिन भारत की समुद्री सीमाओं की रक्षा करने , तस्करी रोकने, बचाव अभियान चलाने और समुद्री संसाधनों की सुरक्षा करने वाले कर्मियों के समर्पण को सम्मानित करता है । यह दिन भारत में फरवरी के महत्वपूर्ण दिनों और रक्षा जागरूकता विषयों के अंतर्गत आता है।
		गुरु रविदास जयंती	गुरु रविदास जयंती संत रविदास के जन्म की याद में मनाई जाती है , जो एक आध्यात्मिक संत और समाज सुधारक थे। उन्होंने समानता, एकता और जातिगत भेदभाव के विरोध का पुरजोर समर्थन किया । यह दिन विशेष रूप से उत्तरी भारत में महत्वपूर्ण है और फरवरी के धार्मिक और सांस्कृतिक विशेष दिनों में शामिल है।
02	2 फरवरी	विश्व आर्द्रभूमि दिवस	विश्व आर्द्रभूमि दिवस पारिस्थितिक संतुलन, जैव विविधता और जल संरक्षण में आर्द्रभूमि के महत्व को उजागर करने के लिए मनाया जाता है। यह रामसर कन्वेंशन (1971) पर हस्ताक्षर की वर्षगांठ का प्रतीक है । फरवरी में पर्यावरण जागरूकता के लिए यह दिन बेहद महत्वपूर्ण है।
03	4 फरवरी	विश्व कैंसर दिवस	हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस विश्व स्तर पर मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) इसका उद्देश्य लोगों को कैंसर रोग और इसके इलाज के बारे में जागरूक करना है। 2020 का विषय था 'मैं हूं और मैं करूंगा'। WHO के अनुसार, यह विषय एक सशक्त आह्वान है जो व्यक्तिगत प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करता है और भविष्य पर प्रभाव डालने के लिए वर्तमान में की गई व्यक्तिगत कार्रवाई की शक्ति को दर्शाता है।
		श्रीलंका का राष्ट्रीय दिवस	हर साल 4 फरवरी को श्रीलंका का राष्ट्रीय दिवस स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्रीलंका को 4 फरवरी 1948 को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी।
04	6 फरवरी	महिला जननांग विकृति के प्रति शून्य सहिष्णुता का अंतर्राष्ट्रीय दिवस	यह अंतर्राष्ट्रीय आयोजन महिला जननांग विकृति (एफजीएम) को समाप्त करने और महिलाओं और लड़कियों के मानवाधिकारों की रक्षा करने पर केंद्रित है । यह लैंगिक समानता और वैश्विक मानवाधिकार मुद्दों पर प्रकाश डालता है।
05	8 फरवरी	राष्ट्रीय ओपेरा दिवस	ओपेरा दिवस हर साल 8 फरवरी को मनाया जाता है। ओपेरा अभिनय, मंच सज्जा, वेशभूषा और नृत्य का एक संयोजन है। इतालवी भाषा में 'ओपेरा' शब्द का अर्थ 'रचना' होता है, और इसके पाठ को 'लिब्रेटो' कहा जाता है, जिसका अर्थ है "छोटी पुस्तक"।
06	9 फरवरी	बाबा आमटे की पुण्यतिथि	बाबा आमटे एक भारतीय समाजसेवक और सामाजिक कार्यकर्ता थे। वे विशेष रूप से कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के पुनर्वास और सशक्तिकरण के लिए किए गए कार्यों के लिए जाने जाते थे।

07	10 फरवरी	विश्व दलहन दिवस	विश्व दलहन दिवस पोषण, खाद्य सुरक्षा और टिकाऊ कृषि के लिए दलहनों के महत्व को बढ़ावा देता है । दलहन वनस्पति आधारित प्रोटीन का एक प्रमुख स्रोत हैं।
		राष्ट्रीय कृमिनाशक दिवस	राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का उद्देश्य स्कूली बच्चों में परजीवी कृमि संक्रमण को रोकर उनके स्वास्थ्य में सुधार करना है। यह भारत में एक महत्वपूर्ण जन स्वास्थ्य पहल है ।
		अंतर्राष्ट्रीय मिर्गी दिवस	हर साल फरवरी के दूसरे सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय मिर्गी दिवस के रूप में मनाया जाता है, और इस वर्ष यह 10 फरवरी को मनाया जा रहा है। यह दिन मिर्गी के बारे में जागरूकता फैलाता है और लोगों को इसके तथ्यों और बेहतर उपचार, बेहतर देखभाल और अनुसंधान में अधिक निवेश की तत्काल आवश्यकता के बारे में शिक्षित करता है।
08	11 फरवरी	महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती	आज का दिन आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती की जयंती का प्रतीक है । उन्होंने शिक्षा, सामाजिक सुधार और वैदिक मूल्यों को बढ़ावा दिया।
		सुरक्षित इंटरनेट दिवस	इस वर्ष यह दिवस 11 फरवरी को मनाया जा रहा है। यह दिन सभी हितधारकों से आह्वान करता है कि वे इंटरनेट को सभी के लिए, विशेष रूप से बच्चों और युवाओं के लिए, एक सुरक्षित और बेहतर स्थान बनाने के लिए एकजुट हों।
09	12 फरवरी	अब्राहम लिंकन का जन्मदिन	यह पर्व अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के सम्मान में मनाया जाता है, जो दास प्रथा को समाप्त करने और लोकतंत्र को संरक्षित करने के लिए जाने जाते हैं।
		डार्विन दिवस	विकासवादी जीव विज्ञान के जनक चार्ल्स डार्विन की जयंती (1809) को मनाने के लिए प्रत्येक वर्ष 12 फरवरी को डार्विन दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन विकासवाद और पादप विज्ञान में डार्विन के योगदान को उजागर करता है। 2015 में डार्विन की पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ स्पीशीज' को इतिहास की सबसे प्रभावशाली अकादमिक पुस्तक घोषित किया गया था।
10	13 फरवरी	विश्व रेडियो दिवस	विश्व रेडियो दिवस रेडियो को संचार, शिक्षा और सूचना के एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में मनाता है , विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में।
		सरोजिनी नायडू की जयंती	13 फरवरी को भारत की कोकिला यानी सरोजिनी नायडू की जयंती के रूप में मनाया जाता है। उनका जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में वैज्ञानिक और दार्शनिक अघोर्नाथ चट्टोपाध्याय और बरदा सुंदरी देवी के घर हुआ था। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष और किसी भारतीय राज्य की पहली महिला राज्यपाल थीं, यानी संयुक्त प्रांत की राज्यपाल, जिसे अब उत्तर प्रदेश के नाम से जाना जाता है।
11	14 फरवरी	वैलेंटाइन डे	वैलेंटाइन डे प्यार, स्नेह और भावनात्मक बंधन का उत्सव है। यह वैलेंटाइन वीक के समापन का प्रतीक है और इसे विश्व स्तर पर मनाया जाता है।

12	15 फरवरी	महाशिवरात्रि	महाशिवरात्रि भगवान शिव को समर्पित एक प्रमुख हिंदू त्योहार है। यह आत्मचिंतन, अनुशासन और आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक है।
13	19 फरवरी	विश्व मानव विज्ञान दिवस	हर साल फरवरी के तीसरे गुरुवार को विश्व मानवविज्ञान दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष यह 19 फरवरी को है। यह दिन मानवविज्ञान के अनछुए क्षेत्रों को सम्मानित करने और आम जनता को इसके बारे में शिक्षित करने के लिए समर्पित है। हालांकि, विश्व मानवविज्ञान दिवस के इतिहास और महत्व पर चर्चा करने से पहले, आइए पहले मानवविज्ञान को परिभाषित कर लें।
14	20 फरवरी	सामाजिक न्याय का विश्व दिवस	यह दिन सामाजिक समानता, निष्पक्षता, रोजगार के अधिकार और समावेश को बढ़ावा देता है, जिससे यह फरवरी में मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय दिवसों के अंतर्गत एक प्रमुख विषय बन जाता है।
15	21 फरवरी	अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भाषाई विविधता और बहुभाषी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह विशेष रूप से छात्रों और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए प्रासंगिक है।
16	23 फरवरी	विश्व शांति और समझ दिवस	हर साल 23 फरवरी को विश्व सौहार्द और शांति दिवस मनाया जाता है। दरअसल, यह दिन रोटरी इंटरनेशनल के पहले सम्मेलन की याद में मनाया जाता है। व्यापारियों के इस सम्मेलन का उद्देश्य एक ऐसा मंच तैयार करना था जहाँ उनकी पृष्ठभूमि मायने न रखती हो, और इसी से कई ऐसे घटनाक्रमों की शुरुआत हुई जिनके परिणामस्वरूप अंततः रोटरी इंटरनेशनल की स्थापना हुई।
17	28 फरवरी	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	भारत में हर साल 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है जो भारतीय भौतिक विज्ञानी सर चंद्रशेखर वेंकट रमन द्वारा रमन प्रभाव की खोज की याद में मनाया जाता है। उन्होंने 28 फरवरी 1928 को रमन प्रभाव की खोज की थी और इस खोज के लिए उन्हें 1930 में भौतिकी विषय में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

चित्र-दीर्घा

महाविद्यालय उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ

भारत राष्ट्रीय बौद्धिक परीक्षा

दिनाँक : 01.02.2026

महाविद्यालय के लिए हर्ष का विषय है कि प्राध्यापिका डॉ० प्रियंका के कुशल नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर की *"भारत राष्ट्रीय बौद्धिक परीक्षा-2026"* का सफल आयोजन किया गया। इस परीक्षा के माध्यम से छात्र-छात्राओं के तार्किक एवं वैचारिक क्षमता को नई दिशा मिली।

अन्तर्विश्वविद्यालयी स्टेट खेल प्रतियोगिता

दिनाँक : 13.02.2026

महाविद्यालय के कक्षा M.A. 1st sem के छात्र एवं होनहार खिलाड़ी भास्कर नैलवाल का चयन पन्तनगर में आयोजित *"अन्तर्विश्वविद्यालयी स्टेट खेल प्रतियोगिता"* हेतु हुआ है।

अन्तर्विश्वविद्यालयी स्टेट खेल प्रतियोगिता

दिनाँक : 13.02.2026

महाविद्यालय में प्रभारी प्राचार्य डॉ० गोरखनाथ की अध्यक्षता एवं NSS प्रभारी डॉ० अंजु निगम के नेतृत्व में *"एक-दिवसीय स्वच्छता एवं जागरूकता शिविर"* का आयोजन किया गया। शिविर में छात्र-छात्राओं द्वारा महाविद्यालय को स्वच्छ व सुव्यवस्थित बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

कलाकीत
अनुभाग
Kazue.

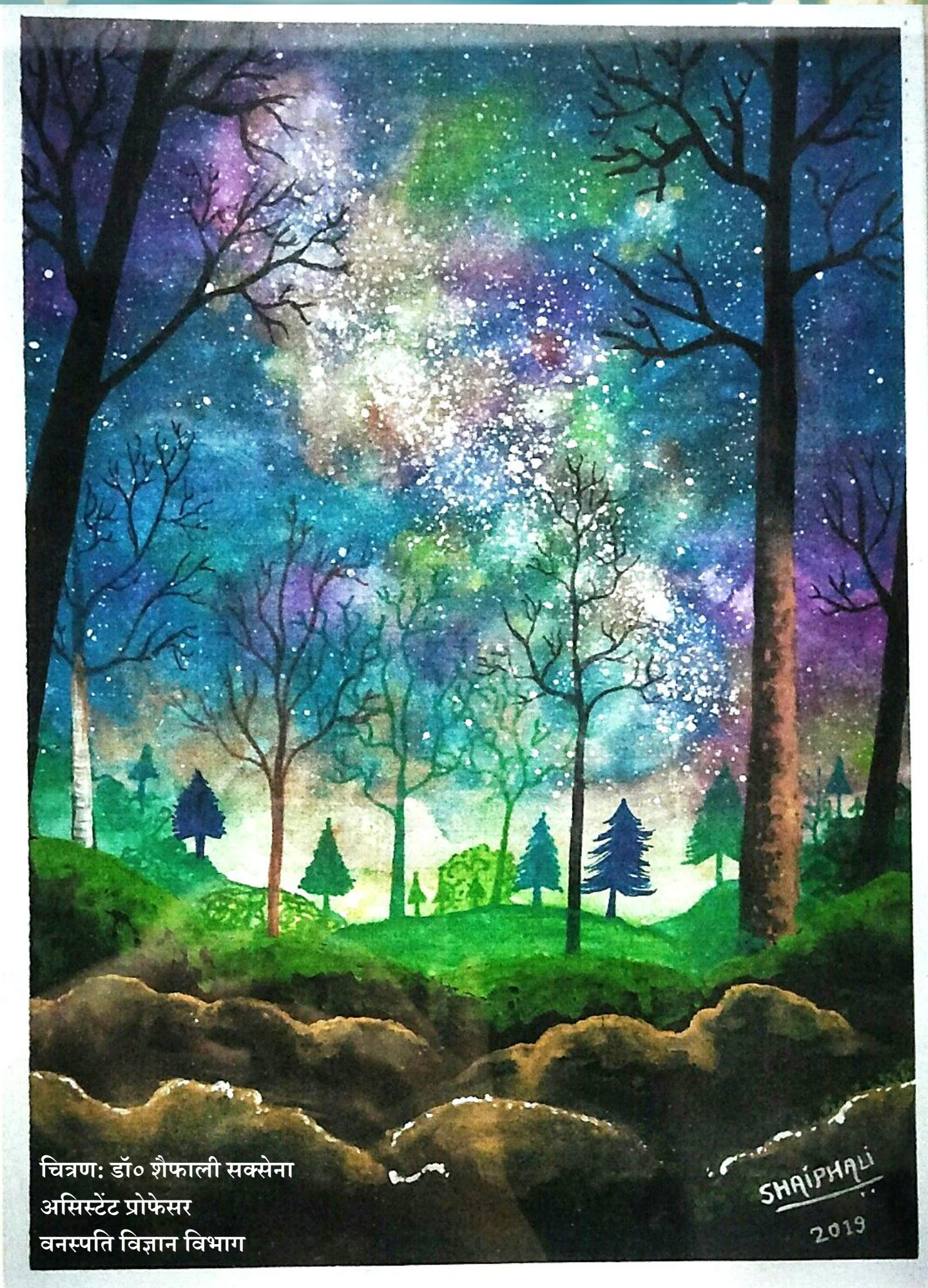

चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

बबीता
बी०एस-सी ० षष्ठ सेमेस्टर

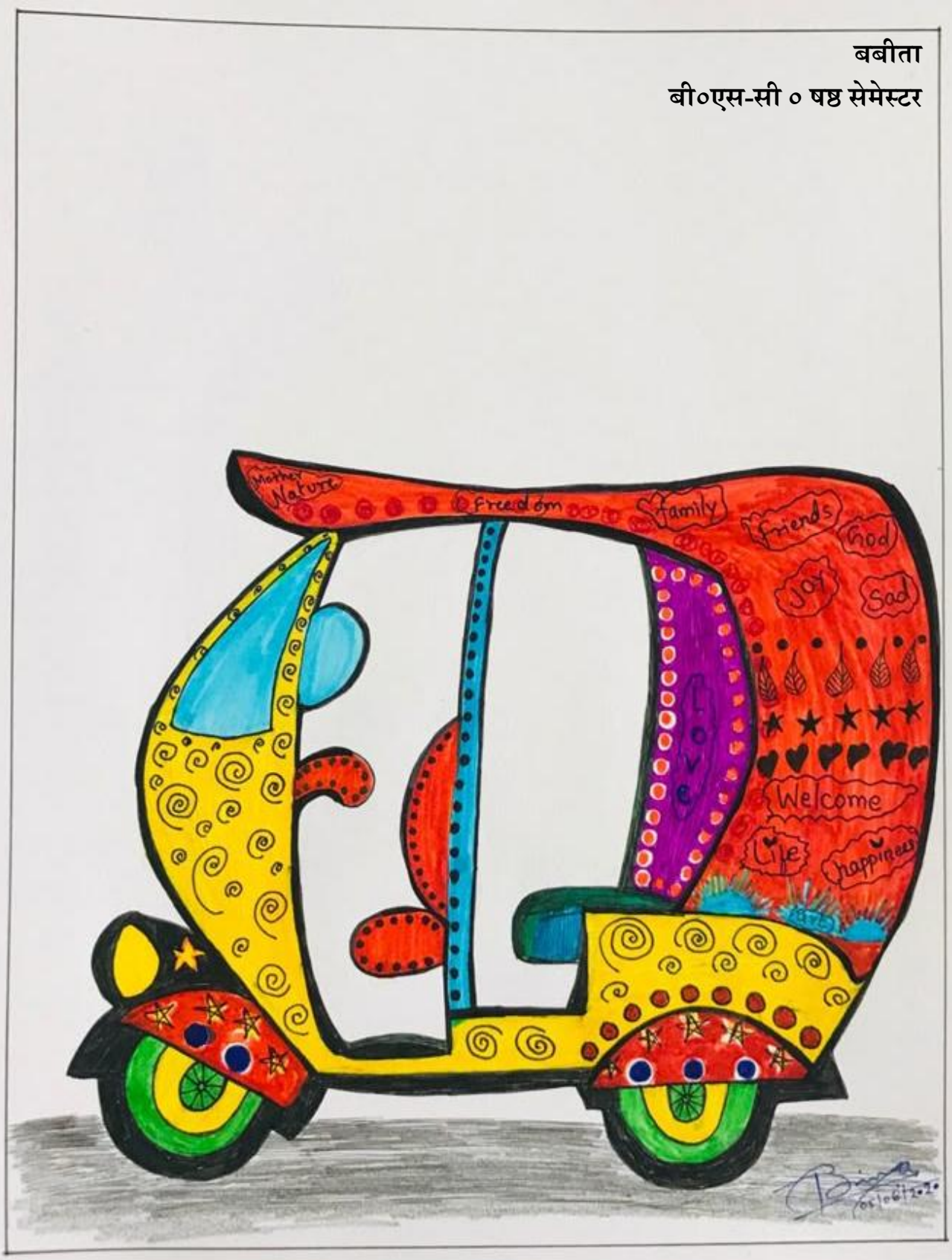

चित्रण: डॉ० शैफाली सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
वनस्पति विज्ञान विभाग

कुछ अनुशंसित पुस्तकें
RED POPPY
MANDALI VAMPIR
INITIAL ABC OF FLOWERS

कुछ अनुशंसित पुस्तकें

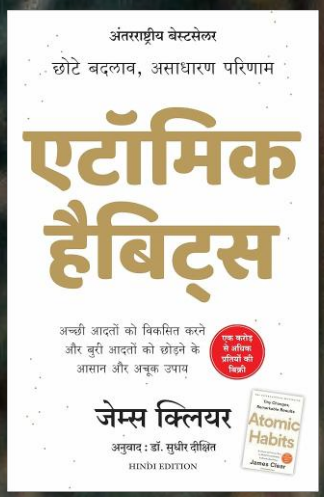

एटॉमिक हैबिट्स

लेखक: जेम्स क्लियर

लोग सोचते हैं कि जब आप अपने जीवन को बदलना चाहते हैं, तो आपको कुछ बड़ा सोचने की ज़रूरत होती है, लेकिन दुनिया के ख्याति प्राप्त आदतों के विशेषज्ञ जेम्स क्लियर ने एक अन्य तरीक़ा खोज निकाला है। उनका मानना है कि वास्तविक बदलाव सैकड़ों छोटे-छोटे निर्णयों के संयुक्त प्रभाव से आता है। छोटे निर्णयों में वे दो पुश-अप प्रतिदिन करने, पांच मिनट पहले जागने और मात्र एक पृष्ठ ज़्यादा पढ़ने जैसी बातों का उदाहरण देते हैं, जिन्हें वे एटॉमिक हैबिट्स कहते हैं। अपनी इस क्रांतिकारी किताब में क्लियर बताते हैं कि आख़िर कैसे छोटे-छोटे बदलाव जीवन को बदल देने वाले नतीजों में तब्दील हो जाते हैं। वे कुछ आसान तकनीकें बताते है जिससे किसी के जीवन में अस्त-व्यस्तता कम हो जाती है और जीवन अपेक्षाकृत आसान हो जाता है। इन तकनीकों में वे आदतों को क्रमबद्ध करने की भुलाई जा चुकी कला, दो मिनट के नियम की अप्रत्याशित शक्ति और गोल्डी लॉक्स ज़ोन में प्रवेश करने की तरकीब का उल्लेख करते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान और न्यूरोसाइंस के गहन शोध के आधार पर वे व्याख्या करते हैं कि ये छोटे बदलाव क्यों मायने रखते हैं। साथ ही वे उन ओलिंपिक स्वर्ण पदक विजेताओं, शीर्ष सीईओ और विख्यात वैज्ञानिकों की प्रेरक कहानियां भी बताते हैं, जिन्होंने उत्पादक, उत्प्रेरित और प्रसन्न बने रहने के लिए छोटी आदतों के विज्ञान को अपनाया है।

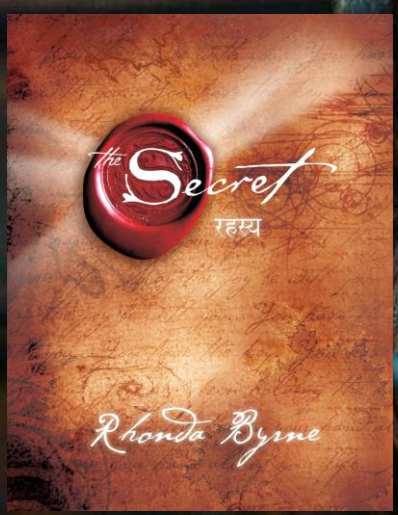

द सीक्रेट

लेखक: रॉन्डा बर्न

एक महान रहस्य के अंश पुराने काव्य, साहित्य, धर्मों, दर्शनों में सदियों से मौजूद हैं। रहस्य के ये सभी अंश पहली बार इकट्ठे होकर अविश्वसनीय रूप में सामने आ रहे हैं, इस रहस्य का ज्ञान और अनुभव सभी लोगों के जीवन का कायाकल्प कर सकता है। इस पुस्तक में आप अपने जीवन के हर पहलू - धन, सेहत, संबंध, खुशी और लोक-व्यवहार - में रहस्य का प्रयोग करना सीखेंगे। आप अपने भीतर छिपी उस प्रबल शक्ति को जान जाएँगे, जिसका दोहन नहीं हुआ है। यह एहसास आपके जीवन के हर पहलू को खुशियों से भर सकता है। रहस्य में आधुनिक युग के उपदेशकों का ज्ञान भी शामिल है, जिन्होंने इसका प्रयोग सेहत, दौलत और सुख हासिल करने में किया है। उनकी रोचक कहानियों से पता चलता है कि रहस्य के ज्ञान पर अमल करने से बीमारियाँ ठीक हो सकती हैं, अथाह दौलत पाई जा सकती है, समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। और असंभव समझी जाने वाली चीज़ों है को हासिल किया जा सकता है। आप अपने हाथों में एक महान रहस्य थामे हैं... यह युगों-युगों से हस्तांतरित होता आ रहा है। इसे सभी पाना चाहते थे, इसे छिपाया गया, यह खो गया, इसे चुराया गया और ढेर सारी दौलत में खरीदा गया। सदियों पुराना यह रहस्य इतिहास के कुछ सबसे मशहूर लोगों को मालूम था : प्लेटो, गैलिलियो, बीथोवन, एडिसन, कारनेगी, आइंस्टाइन तथा अन्य महान आविष्कारकों, धर्मशास्त्रियों, वैज्ञानिकों और चिंतकों को अब यह रहस्य पूरी दुनिया को बताया जा रहा है।

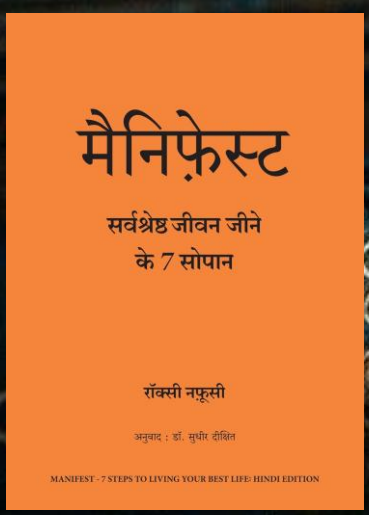

मैनिफ़ेस्ट

लेखक: रॉक्सी नफ़ूसी

क्या आप मैनिफ़ेस्टिंग के जादू से परिचित होना चाहते हैं? क्या आप अपनी असीमित क्षमता को साकार करना चाहते हैं? यह पुस्तक हर उस व्यक्ति के लिए अनिवार्य मार्गदर्शिका है, जो अपने जीवन में कुछ सार्थक करना चाहता है और सफल होना चाहता है। सिर्फ सात आसान क़दम उठाकर आप मैनिफ़ेस्टेशन की सच्ची कला में पारंगत हो सकते हैं और अपने सपनों को सच कर सकते हैं। मैनिफेस्टिंग में विज्ञान और बुद्धिमत्ता का अनूठा संगम है। स्व-विकास का यह अभ्यास आपके लक्ष्यों तक पहुँचने में आपकी मदद करेगा। मैनिफ़ेस्टेशन की बदौलत आप खुद से प्रेम करने लगेंगे और अपनी सर्वश्रेष्ठ ज़िंदगी जिएँगे।

देश दुनिया के कुछ रोचक तथ्य

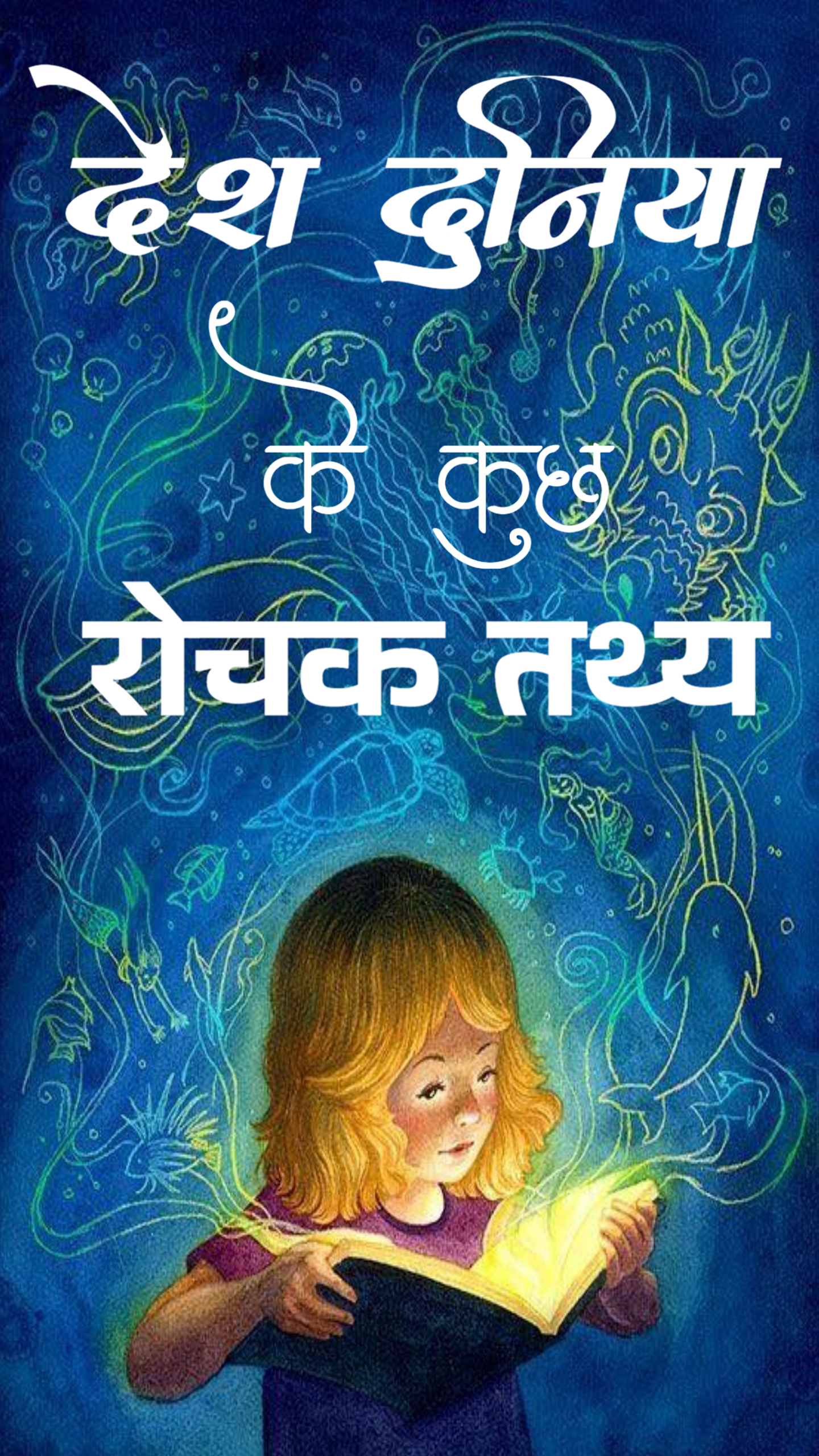

एप्पल iphone के हर विज्ञापन में फ़ोन पर 9:41 AM का समय दिखाया जाता है। ऐसा इसलिए, क्यूंकि इसी समय पहला iphone लांच हुआ था।

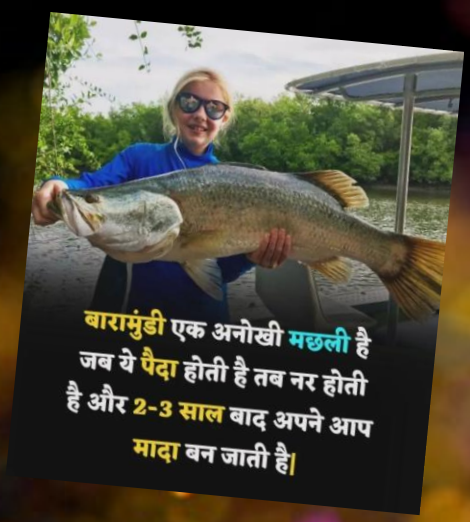

बारामुंडी एक अनोखी मछली है जब ये पैदा होती है तब नर होती है और 2-3 साल बाद अपने आप मादा बन जाती है।

दुनिया का सबसे तेज़ चलने वाला साँप BLACK MAMBA हैं, वह 1 घंटे मे 17 किलोमीटर चल सकता हैं।

शरीर के बारे में ये fact जानते हो?

हम सिर्फ नाक और मुह से नहीं बल्कि हमारे पूरे शरीर में लाखों छोटे छिद्र है उनसे भी स्वास लेते है। यदि नाक और मुह को छोड़ कर हमारे शरीर के सभी छोटे छिद्रों को गाढे तारकोल या किसी अन्य पदार्थ की सहायता से बंद कर दिया जाए तो हमारी मौत भी हो सकती है।

एक कदम सफलता की ओर

ज्ञान सागर

भारत दुनिया का ऐसा पहला देश है जिसने चीनी को शुद्ध करने का तरीका ढूंढा और फिर पूरी दुनिया को भी सिखाया ।

लाल नंबर प्लेट

अगर किसी गाड़ी में लाल रंग की नंबर प्लेट है तो वह गाड़ी भारत के राष्ट्रपति या फिर किसी राज्य के राज्यपाल की होती है। ये लोग बिना लाइसेंस की ऑफिशियल गाड़ियों का उपयोग करते हैं।

दुनिया का सबसे महंगा पदार्थ 'Antimatter' है जिसे प्रतिपदार्थ भी कहा जाता है। इस पदार्थ के 1 ग्राम की कीमत करीब 31 लाख 25 हजार करोड़ रूपए है। Antimatter की ताकत एक परमाणु बम जितनी होती है जो कि पूरे शहर को खत्म कर सकती है।

FACT PEDIA

कजाकिस्तान के कलाची गांव में लोग अक्सर सोते हुए ही नजर आते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इस गांव में यूरेनियम की काफी जहरीली गैस निकलने के कारण यहां के लोग अक्सर सोते हुए पाए जाते हैं । यहां के लोग कहीं भी और कभी भी सो जाते हैं, जिसे स्लीपी हॉलो गांव के नाम से भी जाना जाता है।

नामीबिया की हिम्बा जन जाति की औरतें जिंदगी में सिर्फ एक बार नहाती है वह भी शादी के दिन

इतिहास में पहली बार किसी हाथी को क्रेन की सहायता से 1916 में फांसी पर लटकाया गया था, क्योंकि उसने अपने सर्कस ट्रेनर को उसके अत्याचारों से तंग आकर उसे मार दिया था।

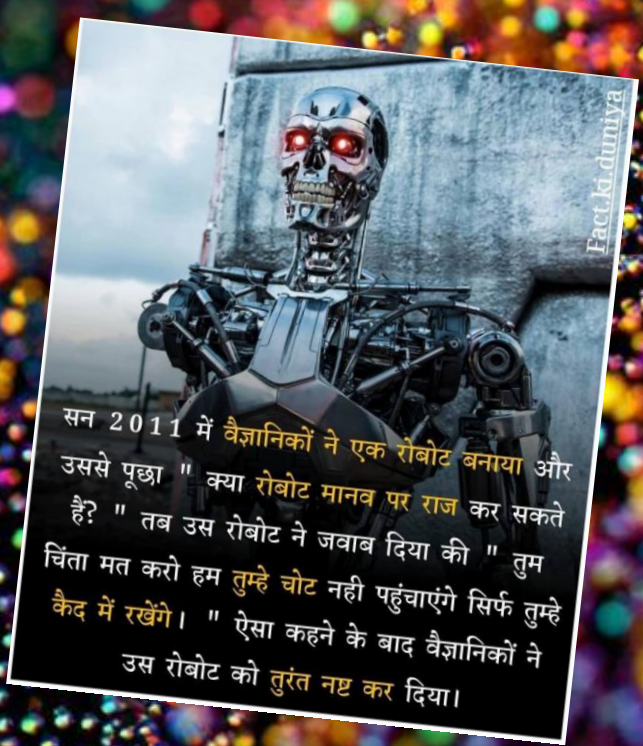

सन 2011 में वैज्ञानिकों ने एक रोबोट बनाया और उससे पूछा " क्या रोबोट मानव पर राज कर सकते है? " तब उस रोबोट ने जवाब दिया की " तुम चिंता मत करो हम तुम्हे चोट नही पहुंचाएंगे सिर्फ तुम्हे कैद में रखेंगे। " ऐसा कहने के बाद वैज्ञानिकों ने उस रोबोट को तुरंत नष्ट कर दिया।

Fact ki duniya

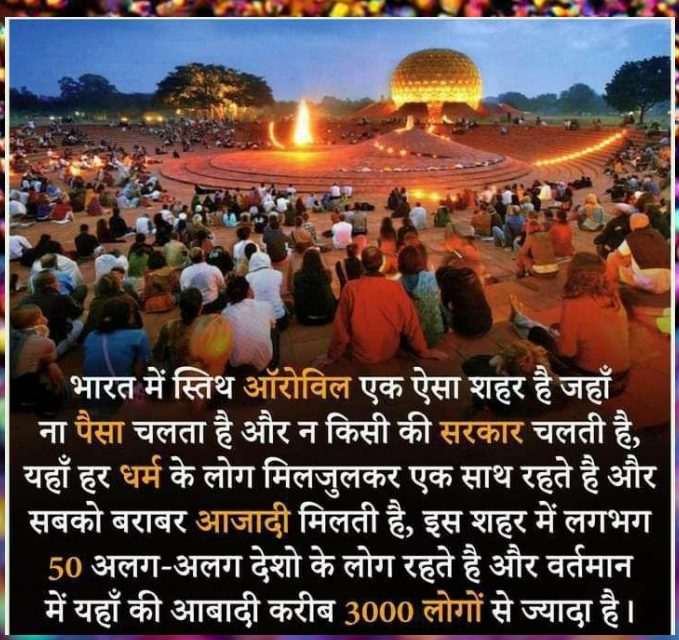

भारत में स्तिथ ऑरोविल एक ऐसा शहर है जहाँ ना पैसा चलता है और न किसी की सरकार चलती है, यहाँ हर धर्म के लोग मिलजुलकर एक साथ रहते है और सबको बराबर आजादी मिलती है, इस शहर में लगभग 50 अलग-अलग देशो के लोग रहते है और वर्तमान में यहाँ की आबादी करीब 3000 लोगों से ज्यादा है।

रोजगार
समाचार

देश में 2025 की आगामी परीक्षायें

विशिष्ट आगामी भर्ती (अक्टूबर-जनवरी 2025)

- **डीएसएसएसबी:** योग्यता: 10वीं पास से लेकर स्नातक तक 216 रिक्तियां, आवेदन की अंतिम तिथि 21 मार्च 2026
- **एनआईटी त्रिची में गैर-शिक्षण पदों पर भर्ती: योग्यता:** स्नातक / इंजीनियरिंग / डिप्लोमा / आईटीआई / स्नातकोत्तर की 23 रिक्तियां, आवेदन की अंतिम तिथि 25 मार्च 2026
- **ओडिशा सिविल सेवा, 2026:** योग्यता स्नातक (21-38 वर्ष), 465 रिक्तियां (OAS, OPS, OFS, ORS), आवेदन की अंतिम तिथि 12 मार्च 2026।
- **सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया:** स्पेशलिस्ट ऑफिसर की 275 रिक्तियां, आवेदन की अंतिम तिथि 23 मार्च 2026।

अधिक विवरण कैसे प्राप्त करें

- **रोजगार समाचार:** रोजगार समाचार आधिकारिक अधिसूचनाओं और उनकी तिथियों के लिए एक प्राथमिक स्रोत है।
- **परीक्षा पोर्टल:** करियर 360 और करियर पावरजैसी प्रतिष्ठित वेबसाइटें भी सरकारी नौकरियों के बारे में अद्यतन जानकारी प्रदान करती हैं।

उत्तराखण्ड में 2025 की आगामी परीक्षायें

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग

- **AIIMS ऋषिकेश:** नर्सिंग ऑफिसर की 2,551 रिक्तियां, आवेदन की अंतिम तिथि 15 मार्च 2026।
- **यूकेपीएससी:** सहायक भूवैज्ञानिक, खनन अधिकारी एवं सहायक रसायनज्ञ की कुल 05 रिक्तियां, आवेदन की अंतिम तिथि 20 मार्च 2026।
- **यूपीसीएल:** निदेशक (लाइसेंसिंग/कोस्टिंग) – प्रतिनियुक्ति, आवेदन की अंतिम तिथि 23 मार्च 2026।

अपडेट कैसे रहें

सबसे सटीक और विस्तृत जानकारी के लिए, आधिकारिक वेबसाइटों पर जाना सबसे अच्छा है:

- यूकेपीएससी: psc.uk.gov.in
- यूकेएसएसएससी: sssc.uk.gov.in

बुरांश!

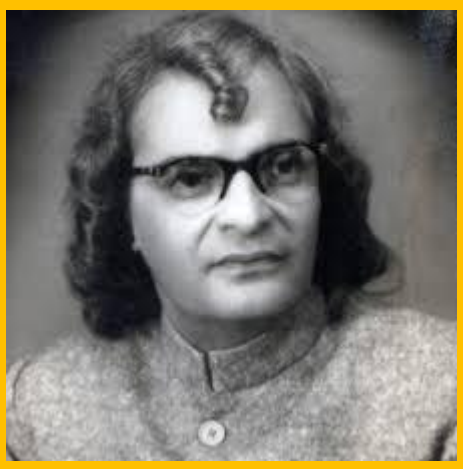

सार जंगल में त्वि ज क्वे न्हां रे क्वे न्हां,
फुलन छै के बुरूंश! जंगल जस जलि जां।

सल्ल छ, दयार छ, पई अयांर छ,
सबनाक फाडन में पुडनक भार छ,
पै त्वि में दिलैकि आग, त्वि में छ ज्वानिक फाग,
रगन में नयी ल्वै छ प्यारक खुमार छ।

सारि दुनि में मेरी सू ज, लै क्वे न्हां,
मेरि सू कैं रे त्योर फूल जै अत्ती माँ।

काफल कुसुम्यारु छ, आरु छ, आँखोड़ छ,
हिसालु, किलमोड़ त पिहल सुनुक तोड़ छ,
पै त्वि में जीवन छ, मस्ती छ, पागलपन छ,
फूलि बुंरुश! त्योर जंगल में को जोड़ छ?

सार जंगल में त्वि ज क्वे न्हां रे क्वे न्हां,
मेरि सू कैं रे त्योर फुलनक म' सुंहा॥

स्व० सुमित्रानंदन पन्त जी को शत-शत नमन

कवर एवं पत्रिका डिजाईन: डॉ० शैफाली सक्सेना